साहित्य-सागर कार्यालय सुइथाकलाँ जौनपुर के

संरक्षक महोदयों की नामावली।

१—श्रीमान् राजा हरपालसिंहजी मेम्बर कोर्ट आफ वार्डस यू० पी० राज्य सिंगरामऊ, जौनपुर।

२— „ ठा० यदुनन्दनसिंह जी बी० ए० डिप्टी कलेक्टर प्रतापगढ़ (अवध)

३— „ ठा० इन्द्रपतिसिंह जी रईस पट्टी नरेन्द्रपुर जौनपुर, मेम्बर डि० बो० जौनपुर।

४— „ पं० विष्णुचन्दजी उपाध्याय रईस पिलकिछा, जौनपुर, मेम्बर डि० बो० जौनपुर।

५— „ पं० नारायण चन्द्र जी उपाध्याय रईस पिलकिछा, जौनपुर।

६— „ पं० कृष्ण चन्द्र जी उपाध्याय रईस पिलकिछा, जौनपुर।

७— „ पं० उमेश चन्द्र जी उपाध्याय रईस पिलकिछा, जौनपुर

८— „ पं० दुःखेश्वर नाथ जी उपाध्याय रईस सराय मुहीउद्दीन, जौनपुर।

९— „ पं० गोविन्ददयाल जी मिश्र सुइथाकलाँ, जौनपुर।

वक्तव्य

पंडित रामनारायण मिश्र अनुभवशाली पुरुष हैं। आप पढ़े लिखे सुधारक हैं। चरित्र-निर्माणमें कुशल हैं। उन्होंने उपदेश-मुक्ताओंका बड़े परिश्रम से संकलन करके उनका जो नाना-दाना सदुपदेश-संग्रहके नामसे तैयार किया है, वस्तुतः अनमोल है और प्रत्येक मनुष्यके धारण करनेके योग्य है। बालकोंके लिये जो संसारमें नये ही आते हैं, यह चरित्र-परिज्ञान बड़ा ही समुचित होगा।

यह संग्रह सचमुच सब तरहसे उपादेय है।

काशी } रामदास गौड़

❀ सदुपदेश-संग्रह ❀

ईश्वर को दयालु और सर्व शक्तिमान समझो, और उसके अस्तित्व में कभी सन्देह मत करो। जगत का अस्तित्व ही उसके अस्तित्व को सिद्ध करता है। जगत को स्वीकार करना और भगवान को अस्वीकार करना वैसा ही है जैसा सोने के गहने को स्वीकार करते हुये सोने को अस्वीकार करना। इसकी पुष्टि के लिये महा कवि अकबर ने भी कैसा अच्छा कहा है।

जुदाई ने "मै" बनाया मुझको।
"जुदा" न होता तो मैं न होता॥
खुदा की हस्ती है मुझसे साबित।
जो मैं न होता खुदा न होता॥

❀ ❀ ❀

सब कार्यों को ईश्वर का विधान समझ कर तुम्हें दुखी नहीं होना चाहिये। तुम्हारा हित तुमसे अधिक ईश्वर समझता है। वह सब काम तुम्हारे हित के लिये करता है। मनुष्य अपनी मूर्खता से उन्हें उलटे समझ कर दुखी होने लगता है।

❀ ❀ ❀

देखो चार बजे मुर्गा उठकर बोलता है। तुम क्या उससे भी गिर गये ? इन्द्रियों के गुलाम मत बनो। चार बजे बिस्तरा छोड़कर उठ बैठो। परमात्मा का भजन करके अपने काम में लग जाओ।

❀ ❀ ❀

जिस प्रकार गंगा की धार हमेशा चलती है ऐसे ही जब तक तुम जीवित रहो तुम्हारे हाथ पैर हमेशा चलते रहें। बराबर काम करते रहो। आलसी कभी मत बैठो। कविवर मैथिलीशरण जी गुप्त के इन पदों पर ध्यान दो।

पृथ्वी पवन नभ जल अनल सब लग रहे हैं काम में।
फिर क्यों तुम्हीं खोते समय हो व्यर्थ के विश्राम में ॥

❀ ❀ ❀

खूब हिम्मत रक्खो पाताल खोद कर पानी निकालने का प्रयत्न करो। अगर तुममें हिम्मत नहीं तो तुम्हारी कुछ भी कीमत नहीं।

फल बहुत हों दूर छाया कुछ नहीं।
क्यों भला हम इस तरह ताड़ हों ॥
आदमी हो और हों हित से भरे।
क्यों न मूठी भर हमारे हाड़ हों ॥

—महाकवि हरिऔध

❀ ❀ ❀

सदा अन्तःकरण को पवित्र बनाने में लगे रहो। अपने आचरणों को शुद्ध करो। सबके प्रति प्रेम करो। सबका सत्कार और आदर करो। सबका हित करो। किसी का भी बुरा न चाहो। इस बातकी परवाह छोड़ दो कि लोग तुम्हें क्या कहते हैं। लोग तो अपने २ मन की कहेंगे। राग द्वेष का चश्मा जैसा होगा वैसे ही कहेंगे। उनकी प्रशंसा में भूलो मत और उनकी निन्दा से घवड़ा कर लक्ष्य से हटो मत।

❀ ❀ ❀

किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार से दुःख मत दो। दूसरों को दुःखी करके सुखी होने की दुराशा छोड़ दो। दूसरों को दरिद्र बनाकर धनी बनने की लालसा मत रक्खो पता नहीं तुम कब मर जाओगे। मरते ही तुम्हारा मनोमहल मिट्टी में मिल जायगा।

❀ ❀ ❀

अपने २ संस्कार के अनुसार सुख दुख सबको होते रहते हैं। तुम्हारे परिवार में माँ बाप स्त्री पुत्रादि जो कोई हों उनको जहां तक तुमसे बने सुख पहुँचाओ। यही तुम कर सकते हो। बाकी परेशान होना व्यर्थ है।

❀ ❀ ❀

संसार के काम छोड़ने की जरूरत नहीं है। संसार में रह कर गृहस्थी मे रह कर तुम्हारी मुक्ति हो सकती है। संसार में चिपटो नहीं, नीति के अनुसार सब काम करो। देखो राजा जनक गृहस्थ थे, फिर भी शुकदेव मुनि उनसे ब्रह्म-विद्या सीखने आये।

दाया करे धरम मन राखे घर में रहे उदासी।
अपना सा दुख सबका जाने ताहि मिले अविनासी॥

❀ ❀ ❀

तुमसे कोई पूछे कि तुम कॉच बनना चाहते हो या हीरा, तो तुम यही कहोगे कि हम हीरा बनना चाहते हैं। परन्तु हीरा बनने के लिये तुम्हें अपने में हरि के गुणों का विकास करना पड़ेगा। निहाई को काँच पर रख कर पीटो। एकही चोट में चूर चूर हो जायगी। फिर हीरे को रक्खो उस पर चाहे जितनी चोटें लगाओ वह वैसे का वैसा बना रहेगा। ऐसे ही जब तुम पर आपत्तियों के पहाड़ टूट टूट कर गिरें और तुम वैसे ही मस्त बने रहो; तुम पर कोई असर न आवे तब तुम हीरे बन जाओगे। तुम्हारे शरीर का मूल्य ही बहुत अधिक हो जायगा।

❀ ❀ ❀

गरीब दुखी गृहस्थों की सहायता या सेवा करना चाहो तो अत्यन्त ही गुप्त रूप से करो। हो सके तो उन्हें

भी पता न लगने दो। और सेवा करके उसे सदा के लिये भूल जाओ। मानो तुमने कभी कुछ किया ही नहीं।

❀ ❀ ❀

हृदय को शुद्ध करो। एक एक दोष चुन चुन कर निकाल दो। सद्गुणों को ढूंढ़ २ कर हृदय में बसाओ। तुम्हारा हृदय देवपुरी बन जायगा। देवता वही है जिसके हृदय में दैवी गुण भरे हैं। नहीं तो वह देव वेष में असुर ही है।

—महात्मा गान्धी

❀ ❀ ❀

परमेश्वर ने मनुष्य को सर्वश्रेष्ठ बनाया है। उसने उसको विचार शक्ति दी है। उसका कर्तव्य है कि वह इस विचार शक्ति से काम ले। यदि नहीं लेता है तो उसमें और पशु में कोई अन्तर नहीं रह जाता।

❀ ❀ ❀

दूसरों के अनुभव से चतुराई सीखो। यह अनुभव बड़े कष्ट से मिलता है। यदि बिना मरे ही स्वर्ग मिले तो मरने की क्या आवश्यकता है। चार मनुष्य किसी बात को बुरा बतलाते हैं तो उसकी परीक्षा स्वयं करने से क्या लाभ? लोगों की अपकीर्त्ति देखकर अपने दोष सुधारो।

❀ ❀ ❀

मनमें कोई भी इच्छा करने के पूर्व खूब सोच विचार लो। और अपनी आशा को मर्यादा के बाहर न लाओ। अर्थात् जो वस्तु मिल सकती है, आशा उसी की करो। यदि ऐसा करोगे तो प्रत्येक काम में तुम्हें सफलता मिलेगी। और निराशाओं में व्याकुल होने का समय न आवेगा।

❀ ❀ ❀

अपने हर रोज की आवश्यकताओं का बोझ हलका करना यह अपना काम है। यह ईश्वर का निर्माण किया हुआ पवित्र काम है। और यही स्वर्गीय सन्देश है।

❀ ❀ ❀

किसी भी स्त्री के सतीत्व को भंग करने के पूर्व मर जाना ही एक उत्तम कर्म है।

—महात्मा गाधी

❀ ❀ ❀

यदि तुम्हें अपने पापों पर दुःख और पश्चाताप होता है तो उनका करना छोड़ दो। और उनके स्थान में पुण्य का कार्य करो। इस तरह तुम्हारी निर्वलता शक्ति के रूप में बदल जायगी। असमर्थता बल के रूपमें परिणित हो जायगी। दुःख और क्लेश शान्ति का रूप धारण कर लेंगे।

अपनी शक्ति को बुराई से हटाकर भलाई में लगाने से पापी मनुष्य भी धर्मात्मा और पुण्यात्मा बन सकता है।

❀ ❀ ❀

भय अविश्वास और द्वेष ही सब असंतोष के कारण हैं। इन्हीं अवगुणों के कारण सभी झगड़े खड़े होते हैं। संसार में तभी शान्ति स्थापित हो सकती है जब ये दुर्गुण दूर हो जायँ।

❀ ❀ ❀

जो मनुष्य अपने को सुधारना चाहता है उसे चाहिये कि प्रति दिन सोने के पहिले आध घंटे तक इस बात पर विचार करे कि दिन भर में कौन २ से बुरे काम हमसे हुये हैं, साथही उनके सुधारने का उपाय भी सोचे।

❀ ❀ ❀

विपत्तियों से घबराना नहीं चाहिये। क्योंकि इसका परिणाम अच्छा है। अर्थात् विपत्ति झेलने से मनुष्य में ऐसी शक्ति आ जाती है कि उसके सहारे वह सभी सांसारिक कठिनाइयों का सामना कर सकता है।

❀ ❀ ❀

दूसरों की सच्ची प्रशंसा से अपने गुणों का और दूसरों की निन्दा से अपने अवगुणों का विकास होता है।

❀ ❀ ❀

तुम इसे निश्चय समझ लो कि यहां के सभी भोग सुख अनित्य है। बिजली की भांति चंचल हैं। शरीर कच्चे घड़े के समान अचानक जरासी ठेस लगते ही नष्ट हो जाने वाला है। इसलिये भोगों से मन हटाकर भगवान से प्रेम करो। इस अमूल्य जीवन को व्यर्थ न खोकर परलोक के लिये कुछ न कुछ बना लो।

चारि दिनन की चाँदनी, यह सम्पति संसार।
नारायन हरि भजन कर; जासो होय उबार॥

❀ ❀ ❀

दो आदमी बात करते हों तो उनकी बात सुनने की चेष्टा मत करो। वरं तुम्हारे वहां रहने से उन्हें संकोच होता हो तो वहां से अलग हो जाओ। और पीछे भी वह बात उनसे खोद खोद कर मत पूछो। यदि उनकी कोई गुप्त बात है तो या तो तुम्हारे आग्रह करने पर उन्हें बड़े संकोच में पड़ना होगा या छिपाने के लिये झूठ बोलना पड़ेगा, जिससे आगे और भी हानियाँ होंगी।

❀ ❀ ❀

जब तुम्हें दुःख सहना पड़े तब याद रखना कि दुःख सहन करने से दूसरों के दुःख में सहानुभूति रखने की तुम्हारी शक्ति में वृद्धि होती है। क्योंकि अगर तुमने किसी प्रकार का कष्ट सहन किया है तो अधिक नहीं

तो जितना कष्ट तुमने सहा है उतने अंश में तुम अवश्य ही दूसरों के साथ अधिक सहानुभूति प्रगट कर सकोगे, जो तुम्हारे ही समान दुःखी है।

❁ ❁ ❁

जो कुछ काम करो पूरे उद्योग और उत्साह से करो। उद्योग उत्साह और धीरज बड़ी भारी शक्ति है।

—महामना मालवीयजी

❁ ❁ ❁

दीन दुखियों पर अत्याचार न करो। और न मजदूरों की मजदूरी देने में टाल मटोल करो। नफ़े के साथ अपनी वस्तुयें वेचते समय अन्तःकरण की आवाज सुनकर थोड़े ही लाभ पर सन्तुष्ट रहो ग्राहकों को भोला भाला समझ कर उनका मूड़ो मत।

बढ़ाता शान शौकत क्यों ग़रीवों को सता करके।
खड़ी है मौत सर पर देख लो आखें उठा करके॥

❁ ❁ ❁

नवयुवको! खबरदार भोग विलास से बचे रहो। और कलुषित प्रेम के चक्कर में न पड़ो। यदि तुम इस फन्दे में पड़े तो तुम्हारा सर्वनाश हो जायगा।

❁ ❁ ❁

तुम ईश्वर के सिवाय किसी से मत डरो। तुम्हारे स्थूल शरीर पर किसी राजा या सम्राट का अधिकार भले ही हो, पर तुम्हारे हृदय, अन्तरात्मा वचन, भाव और विचारों पर केवल उसी अखण्ड नायक परमेश्वर का अधिकार है। यदि तुम उससे डरोगे तो संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति भी तुम्हारे चरणों पर लोटेगी। जो ईश्वर का भय मानता है वह सर्वत्र निर्भय रहता है।

❀ ❀ ❀

बहुत अधिक बोलने से व्यर्थ और असत्य शब्द निकल जाते हैं। इसलिये कर्मक्षेत्र में जितना कम बोलने से काम चले उतना ही कम बोलना चाहिये।

❀ ❀ ❀

जैसे तुम्हें अपने समय का ध्यान रहता है, वैसे ही दूसरों के भी समय का ध्यान रक्खो। किसी भी भले आदमी के पास बिना काम जाकर मत बैठो, शिष्टाचार से या किसी काम से जाना हो तो उसका सुभीता देख कर जाओ। अनावश्यक बैठ कर उसे संकोच में मत डालो। यदि वहां और आदमी बैठे हों तो अपनी बात चीत जल्दी समाप्त करलो जिससे दूसरों को भी बात करने का अवसर मिले।

❀ ❀ ❀

मन की निरोगता ही सच्ची निरोगता है। जिसका शरीर बलवान और हृष्ट पुष्ट है, परन्तु जिसके मनमें बुरी वासना, असत् विचार, काम, क्रोध, लोभ, घृणा, द्वेष, वैर, हिंसा, अभिमान, कपट, ईर्ष्या, स्वार्थ आदि दुर्गुण और दुष्ट विचार निवास करते हैं, वह कदापि निरोग नहीं है। उसकी शारीरिक निरोगता भी बहुत ही जल्दी नष्ट होने वाली है।

❀ ❀ ❀

मन का रोगी आदमी सदा जला ही करता है, वह कभी शान्ति और शीतलता की उपलब्धि नहीं करता, कभी कामना से जलता है तो कभी लोभ से, कभी अभिमान से तो कभी वैर से, कभी क्रोध से तो कभी ईर्ष्या से।

❀ ❀ ❀

सुन्दर भी वही है जिसका हृदय सुन्दर है। जो आकृति से बहुत सुन्दर है जिसके शरीर का रंग और चेहरे की बनावट बहुत ही आकर्षक है परन्तु जिसके हृदय में दुर्गुण और दोष भरे हैं वह गन्दे हृदय का मनुष्य सदा ही असुन्दर है। ज्यों ही उसके हृदय के भाव बाहर आते हैं त्योंही वह सबकी घृणा का पात्र बन जाता है।

—महात्मा गान्धी

❀ ❀ ❀

किसी भी आदमी से बात करते समय पहिले उसकी बात सुनो। दुःख की बात हो तो विशेष ध्यान से सुनो। तुम्हारी दृष्टि में चाहे वह दुःख छोटा हो, परन्तु उसकी दृष्टि में तो वही महान है। उसे सान्त्वना दो। समझाओ। हो सके तो सहायता करो। परन्तु रूखा बर्त्ताव न करो। खास करके गरीब की बात सुनने में तो कभी भूलकर भी रूखेपन से काम न लो। उसके साथ ऐसा बर्त्ताव करो जिससे वह संकोच और भय छोड़कर कम से कम अपना दुःख तुम्हें आसानी से सुना सके।

जिसे मिला चित्त दया भरा हुआ।
सुबोल बोले नर जो पियूषिनी॥
लगा हुआ गात पदार्थ कर्म मे।
उसे करे क्या कलिकाल क्रुद्ध हो॥

-- "प० अम्बिका दत्त त्रिपाठी"

❀ ❀ ❀

जगत चाहे हमें सफल जीवन और सद्भागी समझे, परन्तु यदि हमारे मन में दोष भरे हैं, कामना की ज्वाला जल रही है, भगवत्-प्रेम सुधा का प्रवाह नहीं बह रहा है, तो निश्चय समझो, हमारा जीवन सदा निष्फल ही है।

❀ ❀ ❀

परन्तु जिनको कोई नहीं जानता, अथवा जिसको निष्फल जीवन समझ कर लोग जिनसे घृणा करते हैं और नाक भौं सिकोड़ते हैं, उनमें से हमें ऐसे पुरुष मिल सकते हैं जो वास्तव में सफल जीवन हैं।

❁ ❁ ❁

जगत को कुछ भी दिखाने की भावना न रखकर हृदय को शुद्ध बनाओ। बुरी वासना और दुर्गुणों को हृदय से निकाल कर उसे दैवी गुणों और भगवत प्रेम से भर दो। चेष्टा करो भगवान की शक्ति से कुछ भी कठिन नहीं है, विश्वास करो, तुम्हें अवश्य सफलता होगी।

❁ ❁ ❁

एक कोने में बैठकर मनमाने सुख का साधन पढ़ने में मिलता है, जी चाहे तो बाल्मीकि के तपोवन में विचरण कीजिये, जी चाहे तो हल्दी घाटी में प्रताप के प्रताप का उत्कर्ष देखिये, चाहे सूर के पदों पर भ्रमर बनकर मँडराते रहिये, चाहे तुलसी के मानस सर में डुबकी लगाइये, चाहे व्यास के अति विक्रम का ध्यान कीजिये, चाहे काव्य लोक का आनन्द लूटिये। चाहे वेद और उपनिषदों का मनन कीजिये, चाहे गीता के गौरव में गोते लगाइये, चाहे शेक्सपियर की मानव प्रकृतिका विवेचन कीजिये, चाहे मिल्टन की ज्ञान गरिमा

को अवगाहिये, अगणित ग्रंन्थों के महोदधि में जितना जितना गहरा पैठिये उतने ही बढ़िया रत्न निकालते रहिये।

—आचार्य शुक्ल जी

❀ ❀ ❀

पराये दुख में सहानुभूति दिखाना, जीवमात्र के कल्याण की इच्छा करना, परोपकार के लिये त्याग दिखाना, पीड़ितों की रक्षा में अपनी शक्ति को लगाना, पतितों को उठाना और दुष्टों का दमन करना, आदि ऐसे सद्गुण हैं, जो मनुष्य की विभूति हैं।

❀ ❀ ❀

चरित्र मनुष्य की निज सम्पत्ति है। उसके सामने ऋद्धियाँ और सिद्धियाँ तक तुच्छ है। वह ज्ञान वैराग्य और भक्ति से भी परे है। संसार के सब सद्गुण एक ओर और चरित्र दूसरी ओर रखकर तौलिये, चरित्र का ही पलड़ा भारी रहेगा। चरित्र ही गुण की भूमि है। जिस प्रकार पानी का कोई रंग नहीं होता वह जैसे रंग में मिल जाता है, वैसे ही उसका भी रंग हो जाता है। इसी प्रकार गुण भी जैसे चरित्र में मिलता है वैसा ही रूप धारण करता है।

❀ ❀ ❀

जो मनुष्य परलोक की साधना न कर केवल संसार की साधना में ही लगा रहता है, वह इस लोक और परलोक में दुख और नुक़सान ही प्राप्त करता है। इसलिये अपने अमूल्य जीवन को व्यर्थ ही में गँवा देना कैसी ना समझी है!

याद प्रभु की करें जियें जब तक ।
लोक हित की न बुझ सकें प्यासें ॥
हम गँवा दें इन्हे नहीं यों ही ।
हैं बड़े ही अमोल ये सासें ॥

—महाकवि "हरिऔध"

❀ ❀ ❀

यदि हमारा धन चला गया तो कुछ नहीं गया। यदि हमारा स्वाथ्य चला गया तो कुछ चला गया। और यदि हमारा चरित्र चला गया तो सब कुछ चला गया। "आचारः प्रथमो धर्मः" अर्थात् आचार ही सब से बड़ा धर्म है। यदि किसी ने शास्त्रों का अध्ययन किया, धर्म के तत्त्व को पहचाना, परन्तु उसके अनुकूल आचरण न किया तो क्या किया! किसी गधे पर ग्रन्थों का बोझ लाद दिया जाय तो क्या वह विद्वान हो जायगा। चरित्र-वान का अल्पज्ञान भी चरित्र हीन के अगाध पांडित्य के बराबर है।

❀ ❀ ❀

जिनको दूसरों की निन्दा करने में रस आता है, वे मित्र बनाने की मीठी कला को नहीं जानते। वे फूट का बीज बोकर अपने पुराने मित्रों को दूर हटा देते हैं।

❁ ❁ ❁

जिस विद्या से लोग जीवन संग्राम में शक्तिमान नहीं होते, जिस विद्या से मनुष्य के चरित्र का बिकास नहीं होता, और जिस बिद्या से मनुष्य परोपकार प्रेमी और पराक्रमी नही बनता, उसका नाम विद्या नहीं है।

—स्वामी विवेकानन्द

❁ ❁ ❁

जो फल के लिये भगवान की सेवा करते हैं. और मन से कामना का त्याग नही करते, वे चीज़ का चौगुना दाम चाहनेवाले लोग सेवक नहीं है।

—महात्मा कबीर

❁ ❁ ❁

सांसारिक भोगों को प्राप्त कर जो उन्हें लेता ही नही, वह पूरा मनुष्य है। जो लेता है, परन्तु लेकर सच्चे पात्रों को दे देता है, वह भी सच्चा है। पर वह आधा मनुष्य है, जो दान लेता तो है, पर देना किसी को नहीं जानता। वह तो मक्खी चूस ही नही मधु मक्षिका

जैसा भी है, क्योंकि ऐसा करने में वह अपना कुछ भी हित या कल्याण नहीं करता।

❀ ❀ ❀

क्रोध मनुष्य का बड़ा भारी वैरी है। लोभ अनन्त रोग है। सब प्राणियों पर हित करना साधुता है। और निर्दयता ही असाधुपन है।

❀ ❀ ❀

शान्त स्वभाव रहो। किसी के द्वारा अपने पर कैसा भी दोष लगाये जाने पर भी अपने मन को मत बिगाड़ो।

❀ ❀ ❀

सज्जनों की मित्रता गम्भीर होती है। उनसे शीघ्र मित्रता होती ही नहीं। पर होने पर छूटती भी नहीं। इसके विरुद्ध दुष्टों से शीघ्र मित्रता हो जाती है और अनायास छूट भी जाती है। इनकी मित्रता बड़ी भयानक होती है।

"छायेव मैत्री खल सज्जनानाम्।

❀ ❀ ❀

जिस प्रकार पारस पत्थर के संयोग से लोहा भी सोना हो जाता है और चन्दन के वृक्ष के पास लगे रहने वाले वृक्ष में भी चन्दन जैसी सुगन्ध आती है, उसी

प्रकार सज्जनों की संगति से दुर्जन भी भला बन जाता है। गोस्वामी तुलसीदासजी अपने पीयूषवर्षी शब्दों में कहते हैं:-

"शठ सुधरहिं सत्संगति पाई।
पारस परसि कुधातु सुहाई" ॥

❀ ❀ ❀

पाप और बुराई से वैसे ही घृणा करो, जैसे किसी भारी दुर्गन्धि से करते हो। और भलाई से ऐसा ही प्रेम करो जैसा कि तुम किसी सुन्दर वस्तु से करते हो। इसके बिना आत्म सम्मान नहीं हो सकता। और यही कारण है कि सज्जन पुरुषों को एकान्त समय में बहुत सावधानी से अपनी रक्षा करनी चाहिये।

❀ ❀ ❀

सोने के पहिले तीन बातों का हिसाब करके तब सोओ। पहिले यह सोचो कि आज के दिन कोई पाप तो हमसे नहीं हुआ, दूसरा यह सोचो कि कोई उत्तम कर्म हमने किया या नहीं। तीसरा यह कि कोई काम करने योग्य हमसे छूट गया है या नहीं।

❀ ❀ ❀

लालच छोड़ दो। क्षमाशील बनो। अभिमान त्याग दो। पाप से बचे रहो। सदाचारी बनो। विद्वानों का संग करो। बड़ों का आदर करो। विनयी बनो।

आत्म प्रशंसा कभी मत करो। यश की रक्षा करो। दुखियों पर दया करो। यही संतों का लक्षण है।

इतने गुन जा मे सो संत।
श्री भागवत मध्य जस गावत श्रीमुख कमलाकन्त॥
हरि को भजन साधु की सेवा सर्व भूत पर दाया।
हिंसा लोभ दम्भ छल त्यागे विप सम देखै माया॥
सहनशील आशय उदार अति धीरज सहित विवेकी।
सत्य वचन सबको सुखदायक जेहि अनन्य व्रत एकी॥
इन्द्रियजित अभिमान न जाके करै जगत को पावन।
भगवत रसिक तासु की संगति तीनिहुँ ताप नशावन॥

❀ ❀ ❀

बुरी भावनाओं को मन में न आने दो। यदि बुरी भावनायें मन में आजाँय तो उस समय कोई अच्छी पुस्तक पढ़ने लगो। नहीं तो जितना ही अधिक तुम उन्हें मन से हटाने की चेष्टा न करोगे उतनी ही वे दृढ़ होती जायँगी।

❀ ❀ ❀

भगवान की दया का अवलम्बन जीव के लिये परम अवलम्बन है। इससे और बड़ा सहारा कोई हो ही नहीं सकता। दया पर विश्वास करने वाले मनुष्यों को तो

इसके प्रमाण की आवश्यकता ही नहीं होती। जिसने भगवान की दया का आश्रय लिया, वह स्नेहमयी जननी की सुखद गोद की भांति भगवान की निरापद गोद में सदा के लिये जा बैठा।

❀ ❀ ❀

सेवा करना परम धर्म समझ कर यथा योग्य तन, मन; धन से सबकी सेवा करो। परन्तु मन में कभी इस अभिमान को न उत्पन्न होने दो कि मैंने किसी की सेवा या उपकार किया है। उसे जो कुछ मिला है सो उसके भाग्य से उसके कर्म फल के रूप में मिला है। तुम तो निमित्त मात्र हो। दूसरे को सुख पहुँचाने में निमित्त बनाये गये, इसको ईश्वर की कृपा समझो। और जिसने तुम्हारी सेवा स्वीकार की उसके प्रति मन में कृतज्ञ होओ।

❀ ❀ ❀

बाहरी स्वांग में और सच्चे साधु में उतना ही अंतर है जितना पृथ्वी और आकाश में। साधु का मन राम में लगा रहता है और स्वांगधारी का जगत के विषयों में।

❀ ❀ ❀

मनुष्य जब किसी उत्तम कार्य में लग जाता है तब इसके नीची श्रेणी के कार्य दूसरे लोग आप ही सँभाल

लेते हैं। इसी प्रकार ज्यों २ मनुष्य अपने ध्येय की ओर आगे बढ़ता है, त्योंही त्यों उसके सांसारिक और शारीरिक कार्य कुदरत के नियम से उलटे होने लगते हैं।

—स्वामी रामतीर्थ

❀ ❀ ❀

बदला लेने का ख्याल छोड़ कर क्षमा करना अंधकार से प्रकाश में आना है। और जीते ही जी नरक की जगह स्वर्ग का सुख भोगना है।

❀ ❀ ❀

अपने विरोधी को अनुकूल बनाने का सब से अच्छा उपाय यही है कि उसके साथ सरल और सच्चा प्रेम करो। वह तुमसे द्वेष करे और तुम्हारा अनिष्ट करे, तब भी तुम प्रेम ही करो। प्रति-हिंसा को स्थान दिया तो ज़रूर गिर जाओगे।

❀ ❀ ❀

कर्तव्य में प्रमाद न करना ही सफलता की कुन्जी है। और उसी पर परमात्मा की कृपा होती है। आलसी और कर्तव्य विमुख लोग उसके योग्य नहीं।

❀ ❀ ❀

किसी के मुंह से कोई बात अपने विरुद्ध सुनते ही उसे अपना विरोधी मत मान बैठो। विरोध का कारण

ढूंढ़ो। और उसे मिटाने की सच्चे हृदय से चेष्टा करो। हो सकता है, तुम में ही कोई दोष हो, जो तुम्हें अब तक न दीख पड़ा हो। अथवा वही बिना बुरी नीयत के भी किसी परिस्थिति के प्रवाह में बह गया हो, ऐसी स्थिति में शान्ति और प्रेम से काम लेना चाहिये।

❀ ❀ ❀

बाहर से निर्दोष कहलाने का प्रयत्न न कर मन से निर्दोष बनना चाहिये। मन से निर्दोष मनुष्य को दुनिया दोषी बतलाबे तो भी कोई हानि नहीं। परन्तु मन में दोष रख कर बाहर से निर्दोष कहलाना हानिकारक है।

❀ ❀ ❀

दुःख मनुष्यत्व के विकास का साधन है। सच्चे मनुष्य का जीवन दुःख मे ही खिल उठता है। सोने का रंग तपाने पर ही चढ़ता है।

❀ ❀ ❀

किसी भी अवस्था में मन को व्यथित मत होने दो। याद रक्खो परमात्मा के यहां कभी भूल नहीं होती। और न उसका कोई विधान दया से रहित ही होता है।

❀ ❀ ❀

बीते हुये की चिन्ता मत करो। जो अब करना है उसे विचारो। और विचारो यही कि बाकी का सारा जीवन उस परमात्मा के ही काम आवे।

❀ ❀ ❀

सेवा या सत्कार्य के बदले में मरने के बाद भी कीर्ति न चाहो। तुम्हें लोग भूल जायँ इसी में अपना कल्याण समझो। काम अच्छा तुम करो कीर्त्ति दूसरों को लेने दो। बुरा काम भूलकर भी न करो। परन्तु तुम पर उसका आरोप लगाकर दूसरा उससे मुक्त होता हो, तो उसे सर चढ़ा लो। तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ेगा। तुम्हारा वह सुखदाई मनचाहा अपमान तुम्हारे लिये मुक्ति का और आत्यन्तिक सुख का दरवाजा खोल देगा।

❀ ❀ ❀

कदापि अपने मन में यह न सोचो कि आज मैंने दूसरों की बहुत मदद की है। हां, अपने दिल को टटोल कर ज़रा देख लो कि तुम इससे भी ज़्यादा मदद कर सकते थे, या नहीं। और ज़रा इस पर भी सोचो कि दुनिया के दुख भण्डार को कम करने में तुम्हारी मदद कितनी थोड़ी है।

❀ ❀ ❀

संसार को स्वप्नवत जानो। जीव को दुख इसी लिये है कि वह इसे सच्चा मान बैठा है। स्वप्न में जो वस्तु दिखाई देती है, उसे जीव उस समय सच मान लेता है। उसे दुःख होने लगते हैं। जागते ही उसका भ्रम मिट जाता है। उसे अपनी भूल मालूम हो जाती है। यदि स्वप्नावस्था में ही यह उन दृश्यों को भ्रम समझ लेता तो उसे दुःख सुख न होता। ऐसे ही इस जाग्रदवस्था के संसार का हाल है।

❀ ❀ ❀

संग से ही आदमी अच्छा बुरा बनता है। संग केवल मनुष्य का ही नहीं, इन्द्रियों के विषय मात्र का ही अच्छा बुरा होता है। अच्छे संग का सेवन करो। बुरा संग सदा छोड़ो। कान से बुरी बात मत सुनो। आंखों से बुरी चीज़ मत देखो। जीभ से बुरी बात मत कहो। हाथ से बुरा काम मत करो। पैर से बुरी जगह मत जाओ। मन से बुरा चिन्तन मत करो। और बुद्धि से बुरे विचार मत करो। तुम सब बुराइयों से आपही छूट जाओगे।

सत्सगति मुद मंगल मूला।
सोइ फल सिधि साधन अनुकूला॥

❀ ❀ ❀

सब में परमात्मा का निवास समझकर सब का सम्मान करो। अपमान तो किसी का भी मत करो। स्वयं मान छोड़कर सबका सम्मान करोगे, दूसरों के मान पर तुम्हारा कोई भी आचरण किसी प्रकार ठेस पहुँचाने वाला नहीं होगा तो तुम आपही सबके प्यारे बन जाओगे। फिर सभी तुम्हें हृदय से चाहेंगे। और तुम अपनी इच्छानुसार अधिकांश को सन्मार्ग पर ला सकोगे।

❀ ❀ ❀

दूसरों के साथ ऐसा कोई बुरा वर्ताव कभी मत करो, जैसा अपने साथ दूसरों से तुम नहीं चाहते। यदि तुम दूसरों से सम्मान, सत्कार, उपकार, दया, सेवा, सहायता, मैत्री और प्रेम आदि की आशा रखते हो तो पहिले दूसरों के प्रति तुम यही सब वर्ताव करो।

❀ ❀ ❀

ज्यों २ मनुष्य का अन्तः करण निर्मल और निष्पाप होता जाता है, त्यों २ उसे अपने छोटे २ दोष भी दिखाई देने लगते है। और अपने दोषों की स्वीकृति से उसके चित्त को बड़ा समाधान होता है। वह अपने प्रति कठोर और दूसरों के प्रति उदार होता जाता है।

❀ ❀ ❀

दूसरों में जो बुराइयाँ भलाइयाँ हमें दीखा करती हैं, वे प्रायः हमारे ही हृदय के बुरे भले भावों का प्रतिबिम्ब मात्र होती हैं। यदि हमारे अन्दर बुरे तत्त्व अधिक हैं, तो हमें सामने वाले की बुराइयाँ पहिले और अधिक दिखाई देंगी। और यदि अच्छे तत्त्व अधिक हैं तो अच्छाइयाँ दिखाई देंगी।

द्वेष करोगे द्वेष बढ़ेगा प्रीति करोगे प्रीति।
जैसा मुख वैसा दीखेगा जग दर्पण की रीति॥

—कविवर प० रामनरेश त्रिपाठी

❀ ❀ ❀

सत्पुरुष लोग लोभ के वश में होकर किसी से याचना नहीं करते। और न्याय युक्त धनोपार्जन से अपनी जीविका प्राप्त करते हैं। प्राण जाने पर भी मलिन कर्म नहीं करते। और बिपत्ति में भी ऊँचे बने रहते हैं। यह व्रत तलवार की धार से भी कठिन है। पर सज्जनों में स्वाभाविक होता है।

कामना प्राप्त की चित्त लाते नहीं,
नष्ट होते किसी वस्तु का सोच क्या?
काल-आपत्ति में म्लान होते नहीं,
ज्ञानियों की यही नित्य की चाल है॥

—कविवर प० अम्बिकादत्त त्रिपाठी

❀ ❀ ❀

जिस प्रकार हवा की संगति से धूल आकाश तक पहुँच जाती है, और जल के संयोग से नीचे आकर कींच में मिल जाती है, उसी प्रकार सु-संगति से मनुष्य का उत्थान और कुसंगति से पतन होता है।

❀ ❀ ❀

लोग कहते हैं, जो कुछ होना होता है भाग्य की तख़्ती पर पहिले से ही लिखा जा चुका है, ठीक है। पर इसका आशय यह नहीं कि हमें भाग्य के सहारे ही बैठे रहना चाहिये। बल्कि इसका तात्पर्य तो यह है कि प्रत्येक कर्म का जो फल है वह निश्चित है। अच्छे का अच्छा और बुरे का बुरा। अब यह तुम्हारे अधिकार मे है कि अच्छा फल लो या बुरा।

❀ ❀ ❀

कोई भी व्यक्ति, कोई भी जाति दूसरे से घृणा करेगी तो जीती न बचेगी। देश के सर्व साधारण का अपमान करना ही प्रबल जातीय पाप है। और यही हमारी अवनति का एक कारण है। यदि हमें सचमुच भारत का पुनरुद्धार् करने की इच्छा है तो हमें जनता के लिये अवश्य ही काम करना होगा।

❀ ❀ ❀

मनुष्य को छल, कपट, नीचता, और अपमान से ऐसे बचते रहना चाहिये कि जिससे दूसरों के सामने नीची निगाह न करनी पड़े। अर्थात् दूसरों से लज्जित न होना पड़े। और मन में किसी प्रकार का भय संकोच व शंका न हो।

❀ ❀ ❀

कुत्सित अस्वाभाविक, और पापयुक्त इच्छाओं के दास मत बनो। और न गिरने वाले आत्म-प्रेम और आत्म दया को अपने हृदय में स्थान दो। किन्तु जितना शीघ्र हो सके दृढ़ता पूर्वक इनको समूल नष्ट कर दो। मनुष्य को अपना जीवन अपनी मुट्ठी में रखना चाहिये। जब चाहे उसे उठा ले और जब चाहे उसे नीचे रख दे।

❀ ❀ ❀

तुम जितना ही सहनशील बनोगे, उतनाही तुम्हारा स्वभाव गम्भीर और बुद्धि स्थिर बन जायगी। चित्त जब चंचल न रहेगा और मन कभी विचलित न हो सकेगा तब तुम लोभ के जाल से मुक्त होकर संतोषी बन सकोगे।

❀ ❀ ❀

कभी चरित्र से पतित न होना चाहिये। गिरने में गौरव नहीं है। पतितावस्था से पुनः पुनः उठकर खड़े होओ; इसी में परम गौरव है।

❀ ❀ ❀

किसी मनुष्य के ऐब की सच्ची बात भी यदि उससे कहोगे तो वह बुरा मान लेगा और तुम्हारे प्रति अपने मन में द्वेष करके गहरा शत्रु बन बैठेगा। अतएव बहुत सोच समझकर बोलो। अपने ज़बान की सँभाल हर वक्त रक्खो।

वात ताने की किसी के ऐब की ?
कह न दें मुँह पर बचे या चुप रहें।
बात सच है जल मरेगा वह मगर,
लोग काने को अगर काना कहें॥

—महाकवि "हरिऔध"

❀ ❀ ❀

जो मनुष्य दूसरों की आजीविका का नाश करते हैं ? दूसरों के घर उजाड़ते हैं, दूसरों की स्त्री का उसके पति से विछोह कराते हैं, मित्रों में भेद उत्पन्न कराते हैं, वे अवश्य ही नरक में जाते हैं।

—भगवान वेदव्यास

❀ ❀ ❀

पुत्र स्त्री मित्र भाई और सम्बन्धियों के मिलने को मुसाफ़िरों के मिलने के समान समझना चाहिये। जैसे नींद छूटने के साथही स्वप्न का भी नाश हो जाता है,

वैसे ही इस देह के नाश होने के साथही सब सम्बन्धी भी छूट जाते हैं।

❀ ❀ ❀

मृत्यु जीवन का अंतिम अतिथि है। उससे डरने का मनुष्य ने अपना स्वभाव सा बना लिया है। परन्तु वास्तव में भय का कारण नहीं है। जिस प्रकार दिन भर चल कर थका हुआ पथिक अन्धकारमयी रात्रि की कामना करता है, जिसमें विश्राम करके वह नये उत्साह के साथ नवीन प्रभात में अपने पथ पर अग्रसर हो सके। उसी प्रकार लम्बी यात्रा से थके हुये प्राणियों को मृत्यु का अभि-नन्दन करना चाहिये। जो उन्हें विश्राम देकर नवजीवन के प्रभात में लक्ष्य पथपर अग्रसर होने का उत्साह देती है।

❀ ❀ ❀

वास्तविकता को छिपा और बनावटी मन का सहारा लेकर मैं अपनी परिस्थिति को और भी पेचीदा बना डालता हूँ। न तो करते बनता है और न छोड़ते। इस लिये मुझे चाहिये कि जो कुछ भी करूँ, अन्तःकरण से करूँ, दिखावे के तौर पर नहीं।

—महात्मा टाल्स्टाय।

❀ ❀ ❀

मितव्ययी वनो ।-पर कंजूस कभी मत वनो । अपनी आवश्यकताओं को पूरा करो । प्रतिष्ठा सु-रक्षित रक्खो । मित्रों के साथ भलाई करो । सदुपयोग ही रूपये को कार्यकारी और अच्छा बना देता है; नहीं तो रुपया बहुत ही घृणित और तुच्छ पदार्थ है ।

❀ ❀ ❀

यदि तुम अपनी वर्तमान अवस्था से ऊपर उठना चाहते हो तो सदा अपने अन्तरात्मा की प्रेरणा के अनुसार कार्य करो । और किसी की भी सम्मति मत लो । एवं किसी के कुछ कहने पर ध्यान मत दो । किन्तु अपनी आत्मा की अमोघ शक्ति के अनन्त बल और सामर्थ्य पर दृढ़ विश्वास करो ।

❀ ❀ ❀

संसार की भारी से भारी दुखो की जड़ है विषय वासना । पर हम इसे दबाने और रोकने की कोशिश कभी नहीं करते । उलटा हर प्रकार से उसमें घी डाल कर उस आग को प्रज्वलित ही करने की कोशिश करते हैं । और अंत में शिकायत भी करते हैं कि हम पर आपत्तियां उमड़ रही है, हमें दुख हो रहा है ।

❀ ❀ ❀

क्रोध को अपने पास न फटकने दो। उसे अपने पास आने देना मानो स्वयं अपने हृदय को काटने अथवा अपने मित्र को मारने के लिये तलवार देना है। यदि तुमने किसी की कुछ छोटी मोटी बात सह ली तो लोग तुम्हें बुद्धिमान कहेंगे। और यदि तुमने उसे भुला दिया तो तुम्हारा चित्त प्रसन्न रहेगा।

❀ ❀ ❀

निर्धनता मनुष्य के लिये बेइज्जती का कारण नहीं हो सकती यदि उसके पास वह सम्पत्ति मौजूद हो; जिसे लोग सदाचार कहते हैं।

❀ ❀ ❀

दीर्घ सूत्रता का स्वभाव समय की चोरी है। यदि मनुष्य आज का काम कल पर न टाले तो वह बहुत सी बुराइयों से बच सकता है।

❀ ❀ ❀

जब अनाथ तुम्हारी सहायता के लिये आवें, और वे आंखो में आसूँ भर कर तुम्हारी मदद मांगें तो उनके दुःखों पर ध्यान दो और यथा-शक्ति सहायता करो। रास्ते में भटकते हुये वस्त्रहीन निराधार मनुष्य को शीत से काँपते हुये देखो तो उस समय अपनी उदारता का परिचय दो। दया की छाया उसके ऊपर करके उसके

प्राणों की रक्षा करो। ऐसा करने से तुम्हारी आत्मा को शान्ति मिलेगी।

—वियोगी हरि

❀ ❀ ❀

यह सदा याद रक्खो कि कोई भी मनुष्य तुम्हारा भला या बुरा नहीं कर सकता। त्रिभुवनपति ईश्वर ही सब कुछ करता है। उसी पर विश्वास रक्खो।

❀ ❀ ❀

अपने नाम की बड़ाई चाहने में विरक्त भी फँस जाते हैं। और अपना दोष प्रगट करनेवाले फँसे हुये भी छूट जाते हैं।

❀ ❀ ❀

सोच समझकर बोलने का अभ्यास करने से कुछ ही समय में वाक्-संयम होता है। जिसमें वाक्-संयम नहीं, वह पद पद पर ठोकरें खाता और पीछे पछताता है। पीछे पछताने की अपेक्षा पहिले सोच विचार कर लेना बहुत ही अच्छा है।

सुने बात मीठी न होते दुखी हैं।
सभी जीव सन्तुष्ट होते सुखी हैं॥
लगे क्या तुम्हारा कहो वाक्य प्यारे।
बिना दाम कौड़ी बनें काम सारे॥

—कविवर प० अम्बिकादत्त त्रिपाठी

❀ ❀ ❀

कोई अपना तृण सा उपकार करे तो उसको सुमेर पर्वत के समान जानो। परन्तु आप सुमेर के समान करो तो उसको बालू के कण से भी कम जानो।

❀ ❀ ❀

थोड़े से जीवन में इतना समय कहाँ है जो पर चर्चा और पर निन्दा में खर्च किया जाय। तुम्हें तो अपनी उन्नति के कामों से ही कभी फ़ुरसत नहीं मिलनी चाहिये। इतना अवश्य याद रक्खो कि दूसरों की अवनति करके दूसरों का बुरा करके तुम अपनी उन्नति या भलाई कभी नहीं कर सकते। तुम्हारा मंगल उसी कार्य में होगा जिसमें दूसरों का मंगल भरा हो। कम से कम अपने लिये मोहवश दूसरों का अमंगल कभी मत करो। याद रक्खो :—

तुलसी निज कीरति चहहिं, पर कीरति को खोय।
तिनके मुह मसि लागिहैं, मरे न मिटिहैं धोय॥

—महात्मा तुलसीदास

❀ ❀ ❀

जो मनुष्य आत्म-निरीक्षण न करके अपने को सदा निर्दोष मानता है, और अपने दोषों की ओर देखता ही नहीं, वह अहंकारी ही बना रह जाता है।

❀ ❀ ❀

जो मूर्ख पुरुष अज्ञान से समझता है कि अमुक स्त्री मुझे प्यार करती है वह उसके अधीन होकर खेल के पक्षी के समान नाचा करता है। नीति-निधि प्रणेता पं० अम्बिका दत्तजी त्रिपाठी ने कैसा ठीक कहा है:—

कभी न अन्य नारि प्रेम-भाव से विलोकिये।
न भामिनी भरोस-भार-भव्य-भाव रोकिये॥
सुवर्ण लंक नाथ-नाश जानकी मिलाप से।
हुआ विछोह राम तात कैकयी विलाप से।

महात्मा कबीरदास ने भी कहा है:—

साँप बीछि को मंत्र है, माहुर झारे जाय।
विकट नारि पाले पड़ी, काटि करेजा खाय॥

❀ ❀ ❀

किसी राजा ने एक साधू को नंगा बैठा हुआ देख कर पूछा कि क्या चाहते हो? साधू बोला मुझे मक्खियाँ तंग किया करती है। राजा ने कहा उन पर मेरा क्या वश है। साधू ने जवाब दिया मक्खी सरीखे तुच्छ जीव भी जिसके अधिकार में नहीं उससे मैं क्या माँगू।

इज्जत रहे यारो आशना के आगे।
महजूब हो शाहो गदा के आगे॥

यह पाँव चले तो राहे मौला में चले ।

यह हाँथ उठे तब ता ख़ुदा के आगे ॥

—"अनीस"

❀ ❀ ❀

संपति में महात्मा लोगों का दिल कमल से भी कोमल हो जाता है, किन्तु विपत्ति में वह पहाड़ की बड़ी भारी शिला से भी सख़्त हो जाता है।

❀ ❀ ❀

कटा छँटा हुआ वृक्ष फिर बढ़ जाता है, इस बात को विचार कर सज्जन लोग विपत्ति से नहीं घबड़ाते ।

जी लगा यह पाठ हम पढ़ते रहे ।

कट गये हैं बाल बढ़ने के लिये ॥

बात यह चित से कभी उतरे नहीं ।

है उतरते फूल चढ़ने के लिये ॥

—महाकवि "हरिऔध"

❀ ❀ ❀

समुद्र के किनारे टटोलने से तो घोंघी ही मिलेगी। मोती की चाह है तो गहरी डुबकी लगाओ ।

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ ।

❀ ❀ ❀

तिनका सब से छोटा होता है। तिनके से रूई हलकी होती है। रूई से भी हलका भिक्षा माँगने वाला होता है जिसे हवा भी उड़ा कर नहीं ले जाती। क्योंकि वह समझती है कि कहीं भिक्षुक मुझसे भी कुछ माँग न बैठे। महात्मा कबीरदासजी ने कहा है:—

आव गया आदर गया, नैनन गया सनेह।
ये तीनों तब ही गये, जबहिं कहा कछु देह॥

रहीम कवि ने भी कहा है:—

रहिमन याचकता गहे, बड़े छोट होइ जात।
बलि पे आवत ही भयो, बावन अंगुर गात॥

❀ ❀ ❀

किसी ने एक बुद्धिमान से पूछा आपने बुद्धि किस से सीखी? जवाब दिया कि अंधों से जो बिना रास्ते को टटोले आगे नहीं बढ़ते।

उठ नहीं सकता पद दूसरा।
प्रथम पैर पड़े जब लों नहीं॥
अपर धाम नहीं जब लों मिले।
बुध नहीं तजते निज वास को॥

—कविवर प० अम्बिका दत्त त्रिपाठी।

❀ ❀ ❀

दो बातें गाँठ में धर रक्खो तो धोखा न खाओगे। कोई काम बिना सोचे बिचारे न करो। जब कोई तुम्हारी

भूल दिखला दे तो अपनी राय को बदलने में लाज न करो।

❀ ❀ ❀

दुष्ट मित्र अपने मित्र की वदनामी और हानि की तदवीर करता है, ज़रा सा अपराध हो जाने पर भी जामे से बाहर हो जाता है और पीछे बड़ी २ कठिनाइयों से भी शान्त नहीं होता। इसी लिये बुद्धिमान को उचित है कि दुष्ट, कपटी, और अ-योग्य, मित्र को पहिचान कर दूरही से हाथ जोड़ दे।

❀ ❀ ❀

यद्यपि मान, वड़ाई और प्रीति माँगने से नहीं रह जाती। परन्तु पर उपकार के लिए माँगने में हर्ज नहीं है जैसा कि कबीरदास ने कहा है:—

मर जाऊँ मांगू नहीं, अपने तन के काज।
परमारथ के कारने, मोंहि न आवै लाज॥

❀ ❀ ❀

जिन भले मनुष्यों का मन सदा भलाई में लगा रहता है उनका दुःख नाश हो जाता है और उनको पद पद पर सम्पदा मिलती है। महात्मा तुलसीदासजी ने कहा है:—

"परहित वश जिनके मन माँही ।
तिन कह जग दुर्लभ कछु नाहीं ॥"

❀ ❀ ❀

मनुष्य के लिये इस लोक में यही सुख है १-निरोग रहना २-किसी का कर्जदार न रहना ३-देश-विदेश फिरना ४-विद्वानों का संग करना और सदा निर्भय होकर रहना ।

❀ ❀ ❀

नीचे लिखे मनुष्य सदा दुःखी रहा करते हैं। दूसरों से ईर्षा द्वेष करने वाले २-दूसरों से घृणा करने वाले ३-असंतोषी ४-हर समय क्रोधमुखी ५-बात बात में सन्देह करने वाले ६-पराधीन होकर जीविका चलाने वाले ।

❀ ❀ ❀

जो मनुष्य अधिकार रहते हुये भलाई नहीं करता, उसे शक्तिहीन और अधिकार हीन होने पर दुःख भोगना पड़ता है । अत्याचारी से बढ़ कर और अभागा कोई नहीं है क्योंकि विपत्ति के समय अत्याचारी का मित्र कोई नही होता है ।

❀ ❀ ❀

हर एक सुन्दर सूरत वाले का मिज़ाज भी अच्छा हो यह कठिन बात है। क्योंकि भलाई दिल के अन्दर होती है, न कि सूरत में। तुम आदमी के तौर तरीक़े देखकर एक दिन में यह जान सकते हो कि इसने कितना इल्म हासिल किया है, अर्थात् यह कितना विद्वान् है। मगर उसके दिल की तरफ़ से निर्भय मत रहो और अपनी पहिचान का घमण्ड न करो। क्योंकि मनुष्य की दुष्टता का पता वर्षों में लगता है। महाकवि "हरिऔध" जी की अनूठी उक्ति सुनिये:—

ठीक वैसा न मान लें उसको।
जो कि जैसे लिवास में दीखे॥
जी अगर है टटोल लेना तो।
देखना आँख खोल कर सीखे॥

❀ ❀ ❀

यदि तुम दूसरों को अपनी बुद्धिमानी दिखाने और वाह-वाही लूटने की ग़रज से अपने से अधिक बुद्धिमान् से वाद विवाद करोगे, तो उलटी तुम्हारी मूर्खता ही प्रकट होगी। जब कोई व्यक्ति तुम्हारी अपेक्षा अच्छी बात कहे और तुम ख़ुद भी उस बात को भली भाँति जानो तो भी कोई एतराज़ न करो।

❀ ❀ ❀

मन की तरंगों को रोकने में सुख है। इसके बिना आदमी ऐसा वहा जाता है जैसे बिना डाँड़ के नाव।

जेती लहर समुद्र की, तेती मन की दौर।
सहजै हीरा नीपजै, जो मन आवै ठौर॥

—महात्मा कबीरदास।

❀ ❀ ❀

किसी ने लुकमान हकीम से पूंछा कि आपने सभ्यता कहाँ से सीखी? जवाब दिया कि असभ्य मनुष्यों से पूंछा कि कैसे? बोले, कि इनकी जो बात मेरे दिल में खटकी उसका मैंने त्याग किया।

❀ ❀ ❀

अपनी सामर्थ्य देखकर किसी को वचन दो और जब दिया तो उसे जैसे बने पूरा करो। अच्छे लोग कहते थोड़ा और करते बहुत हैं। महात्मा कबीरदासजी ने कहा है :—

कथनी मीठी खाँड़ सी, करनी विष की लोय।
कथनी तजि करनी करै, विष से अमृत होय॥
करनी बिन कथनी कथै, अज्ञानी दिन रात।
कूकर ज्यों भूँकत फिरै, सुनी सुनाई बात॥

❀ ❀ ❀

संसार में आदमी को ४ बातें बिगाड़नेवाली है। जिनमें पूरी सँभाल की आवश्यकता है। १—जवानी २—धन ३—अधिकार ४—अविवेक और जो कोई इसी के साथ मूर्ख भी हो तो उसका कहां ठिकाना लग सकता है।

मनुज प्राप्तकर धन यौवन अधिकार तथा अविवेक।
नाश स्वय हो जाता करके कुत्सित कर्म अनेक॥

❀ ❀ ❀

चार चीजें स्वयं आती हैं। १—खुशी २—रंज ३—रोजी ४—मौत।

❀ ❀ ❀

आदमी कभी यह चिन्ता न करे कि उसको कोई उद्यम नहीं मिलता। पहिले अपने को उस काम के करने योग्य तो बना ले।

❀ ❀ ❀

जो पराई उन्नति और बढ़ती नहीं देख सकता, जो दूसरों में दोष निकालता और निन्दा करता है, जो औरों को देखकर कुढ़ता है, जिसका अन्तःकरण मैला है किन्तु मुख पर प्रसन्नता होती है वह दुष्ट होता है।

खलन हृदय अति ताप विशेषी।
जरहिं सदा पर संपति देखी॥
जहँ कहुं निन्दा सुनहि पराई।
हरपहिं मनहुं परी निधि पाई॥
बोलहिं मधुर वचन जिमि मोरा।
खाहि महाअहि हृदय कठोरा॥
काहू कै जो सुनहिं बड़ाई।
स्वास लेहिं जनु जूड़ी आई॥

गोस्वामी तुलसीदासजी

❀ ❀ ❀

ऐ जल्दी चलनेवाले! उस साथी पर दया कर जो तेरे साथ साथ चलने में असमर्थ है।

ऐ धनी पुरुष! उसको मत भूल जो दरिद्रता के अत्याचार से पीड़ित है।

ऐ सुख की नींद सोनेवालो! उसका ख़्याल ज़रूर रखो जिसे शोक सोने नहीं देता।

❀ ❀ ❀

कनफ्यूशियस ने कहा—अफ़सोस! मुझे अपने दोष आप देख सकनेवाला, अपने तईं दोषी ठहरानेवाला मनुष्य न मिला।

❀ ❀ ❀

इस समय जो तुम्हारी खुशामदें करता है, ज़रूरत के समय तुम्हारे काम न आवेगा। बातें बनाना हवा की भांति सहज है, किन्तु सच्चा दोस्त मिलना कठिन है। जब तक तुम्हारी अंटी में टका है, तब तक अनेक मनुष्य तुम्हारे दोस्त बने रहेंगे। जब अंटी खाली हो जायगी, तो कोई तुम्हारे पास भी न फटकेगा।

सियह वख्ती मे कब कोई किसी का साथ देता है।
कि तारीकी में साया भी जुदा होता है इन्साँ से॥

"नासिख"

❀ ❀ ❀

साँप के दांतो में ज़हर रहता है। मक्खी के सिर में ज़हर रहता है। विच्छू की पूंछ में ज़हर रहता है किन्तु दुर्जन के तो सब शरीर में ही ज़हर रहता है।

❀ ❀ ❀

मनुष्य को चाहिये कि सुख की इच्छा करने के पहिले धर्म कार्य करे। जिस भांति स्वर्ग में अमृत का नाश नहीं होता उसी भांति धर्मात्मा का नाश नहीं होता।

खल नहीं सकता उन्हे खलपन दिखा।
छल नहीं सकता उन्हे कोई छली॥
खलबली उनमें कभी पड़ती नहीं।
धर्म बल जिनको बनाता है बली॥

महाकवि "हरिऔध"

❀ ❀ ❀

सदा सब अवस्थाओं में प्रसन्न रहने का अभ्यास डालो। व्यर्थ चिन्ता करना छोड़ दो। जब २ चिन्ता का दौरा परेशान करे, उसी समय चित्त-वृत्ति उस ओर से हटालो और मन में साहस, आशा व आत्म-विश्वास का संचार करो। चिन्ता रूपी राक्षसी के फन्दे से छूटने का यही एक मात्र उपाय है। परम शान्ति, निश्चिन्त और प्रसन्न रहो। जीवन को आनन्द मय बनाओ। फिर चिन्ता या दुःख तुम्हारे पास न फटक सकेंगे।

❀ ❀ ❀

दयालु पुरुष दूसरे के दुःख से पीड़ित हो जाते हैं। यह भावना ईश्वर के प्रति सर्वोत्कृष्ट पूजा के सदृश है जिसे कि मनुष्य भगवदर्चन के रूप में उपस्थित कर सकता है।

❀ ❀ ❀

किसी को नीच पतित या पापी मत समझो। याद रक्खो जिसे तुम नीच पतित और पापी समझते हो, उसमें भी तुम्हारे वही भगवान विराजित हैं, जो महात्मा, ऋषियों के हृदय में है। सबको प्रेम-दान करो, सबके प्रति सहानुभूति रक्खो, किसी की निन्दा मत करो और न किसी की निन्दा सुनो ही। निन्दा सुननी हो तो अपनी सुनो, और करनी आवश्यक समझो तो अपनी करो।

नारायण तू निज हिये, अपने दोष विचार ।
ता पीछे तू और के औगुण भले निहार ॥

❀ ❀ ❀

महाकवि ग़ालीब ने भी कहा है:—

न सुनो गर बुरा कहे कोई ।
न कहो गर बुरा करे कोई ॥
रोक लो गर गलत चले कोई ।
बख्श दो गर खता करे कोई ॥

❀ ❀ ❀

कटुवचन विष भरी बरछी के समान है जिसकी चोखी नोक कलेजे में छेद कर देती है । देखो काल की अजगुत को, क्या खेल तमाशे करता है । जीभ तो मुंह में चलती है और माथा कट कर गिरता है । महात्मा कबीर दासजी ने कहा है :—

मधुर वचन है औषधी, कटुक वचन है तीर ।
श्रवण द्वार ह्वै संचरै, सालै सकल शरीर ॥

❀ ❀ ❀

प्रातस्मरणीय महात्मा तुलसीदासजी भी कहते हैं:—

तुलसी मीठे वचन ते, सुख उपजत चहुंओर ।
वशीकरन एक मंत्र है, तजि दे वचन कठोर ॥

❀ ❀ ❀

कोई कुकर्म तुमसे बन पड़ा है, उसका पछितावा तब तक व्यर्थ है, जब तक कि यह प्रण न कर लो कि फिर ऐसा काम न करोगे।

❀ ❀ ❀

जो भड़के हुये क्रोध के बहके रथ को रोक सके, वही कुशल रथवान है। हाथ से बाग पकड़े रहने में कोई चतुराई नहीं है।

❀ ❀ ❀

आदमी को चाहिये कि जब विपत्ति आ पड़े तो इस विचार में समय न गँवावे कि विपत्ति का कारण क्या है। और उसके रोकने की कौन तदबीर थी। उसका अवसर तो बीत गया। अब विपत्ति से बचने का जो उपाय हो, उसे सोचे और जो यत्न सूझे उसे जी लगाकर करे।

बीती ताहि बिसारि दे, आगे की सुधि लेय।
जो बनि आवे सहज में, ताही में चित देय॥
ताही मे चित देय, बात जो ही बनि आवै।
दुर्जन हँसै न कोय, चित्त में खता न पावे॥
कह गिरधर कविराय, यहै करु मन परतीती।
आगे को सुख समुझि, होय बीती सो बीती॥

❀ ❀ ❀

सुखी वही है, जो गहरे ध्यान से देखता हुआ अपनी अंधकार मयी स्थिति को भी प्रकाशमयी बना लेता है। जैसे कि हम अँधेरी कोठरी में रक्खी हुई वस्तुओं पर अपनी लगातार दृष्टि रख कर उनको प्रकाशमयी कर देते हैं।

—स्वामी रामतीर्थ।

❀ ❀ ❀

जिस मनुष्य की अच्छे कर्म के लिये निन्दा होती है, वह बड़ा भाग्यवान है। किन्तु जो अपने भले कर्मों के बदले में धन्यवाद या किसी फल की आशा करता है, वह महा अभागा है। क्योंकि वह सुकर्मों का मूल्य चाहता है। जिस मनुष्य की उसने भलाई की हो उसे सुखी देखने की प्रसन्नता ही उसके लिये पूर्ण पुरस्कार है।

—वियोगी हरि।

❀ ❀ ❀

मन ५ प्रकार के होते हैं। १—मुर्दा मन जैसे नास्तिकों का। २—रोगी मन जैसे पापियों का। ३—अचेत् मन जैसे पेट भरों का। ४—उलटा मन जैसे ब्याज की कमाई खाने वालों का। ५—स्वस्थ्य मन जैसे संतों का।

परमात्मा में विश्वास न होने ही से विपत्तियों का विषयों के नाश का और मृत्यु का भय रहता है। जिनका उस भयहारी भगवान में भरोसा है, वह सदा निर्भय है।

❀ ❀ ❀

इस भ्रम में मत रहो कि पाप प्रारब्ध से होते हैं। पाप होते है तुम्हारी आसक्ति से और उनका फल तुम्हें भोगना पड़ेगा।

❀ ❀ ❀

मान चाहनेवाले ही अपमान से डरा करते हैं। मान का बोझा मनसे उतरते ही मन हलका और निर्भय बन जाता है।

❀ ❀ ❀

जगत में बड़ी २ परीक्षायें होती हैं। यदि एक बार गिर पड़ो तो हताश मत होओ। गिरना बुरा नहीं है। क्योंकि गिरकर भी उठा जा सकता है। जो चलता है वही गिरता भी है। घबराओ मत। चलो गिरो उठो फिर आगे बढ़ो।

न हो जो कि बिगड़ा बना कौन ऐसा।
गिरा जो न होवे उठा कौन ऐसा॥
न हो जो कि उतरा चढ़ा कौन ऐसा।
घटा जो न होवे बढ़ा कौन ऐसा॥

सदा एक सा है किसी का न जाता।
सदा का यही ढंग ही है [illegible] ॥
—[illegible] हरिऔध।

अगर तुम्हें कोई कष्ट है तो याद रक्खो कि यह कष्ट ही खास कष्टदायक नहीं है। वरन इसके विषय में तुम्हारी समझ जिसे तुम चाहो तो एक छिन में बिसार सकते हो।

संसार में सब घोर नींद सो रहे हैं और अचेत होकर जुदा जुदा सपने देख रहे हैं। इसीलिये किसी की निन्दा न करो।

बीते हुये की चिन्ता न करो। जो अब करना है उसे विचारो और विचारो यही कि बाकी का सारा जीवन उस परमात्मा के ही काम आवे।

भक्त और साधु बनना चाहिये। कहलाना नहीं चाहिये। जो कहलाने के लिये भक्त बनना चाहते हैं वे

पापों से ठगे जाते हैं। ऐसे लोगों पर सबसे पहिला आक्रमण दम्भ का होता है।

❀ ❀ ❀

हर्ष के साथ शोक और भय इस प्रकार लगे रहते हैं, जिस प्रकार प्रकाश के साथ छाया। सच्चा सुखी वह है जिसकी दृष्टि में दोनों समान हैं।

❀ ❀ ❀

संसार जितना लक्ष्मी के पीछे पागल है, उसके शतांश परिश्रम में ही वह परमार्थ का अचल धन प्राप्त कर सकता है।

❀ ❀ ❀

मनुष्य को चाहिये कि वह अपना मित्र आपही बने। बाहरी मित्र की खोज में न भटके।

❀ ❀ ❀

धन की मिठास उसी को मिलेगी जिसने उसकी कमाई में मेहनत की कडुआई को चक्खा है।

❀ ❀ ❀

बिना परिश्रम के कोई बढ़ नहीं सकता। जो तुम्हारी योग्यता भारी है तो परिश्रम उसको और बढ़ा देगा। और

जो साधारण है तो इसकी कमी को पूरा कर देगा। ढंग से परिश्रम करने वाले के लिये कोई काम कठिन नहीं है।

* * *

जहाँ कोई बात मुंह से निकली चार घोड़े की गाड़ी से नहीं पकड़ी जा सकती। इसलिये जीभ को संभाल कर रक्खो।

* * *

बात दिल की कुञ्जी है जिससे मन का हाल खुलता है। हँसी उड़ाना झुलसन वाली बिजली है।

* * *

आलस अवगुणों का बाप दरिद्रता की माँ मानसिक और शारीरिक रोगों की खान और जीते जागते आदमी की समाधि है।

* * *

एक बड़े विद्वान् का वचन है कि मुझको कोई बात ऐसी नहीं खटकती जैसा कितनों का यह कहना कि उनका समय नहीं बीतता।

* * *

जिसकी इन्द्रियें स्वप्न में भी कभी विकार वश नहीं होतीं वह जगद्वन्द्य है।

* * *

दोष को छिपाने ही में उसके संग्रह की इच्छा रहती है।

❁ ❁ ❁

बुद्धि, बल और पुरुषार्थ के अभिमान का त्याग करके अपनी तुच्छता को समझकर अपने आपको रजवत् मान लेने से ईश्वर में श्रद्धा जमती है।

❁ ❁ ❁

आत्मबल के सामने तलवार का बल तृणवत् है।

❁ ❁ ❁

कहीं कृत्रिमता न घुस जाय, इसकी निगरानी रक्खें। आजकल बहुतेरे कार्यों में कृत्रिमता घुस जाती है। और फिर उसका कोई फल नहीं मिलता। कृत्रिमता अर्थात् सच्चे और झूठे का भेद। इस सच और झूठ का भेद विचार पूर्वक पहिचानना सीखो। और जो कुछ करना हो समझ बूझकर करो।

❁ ❁ ❁

अपने कार्य्य में तल्लीन हो सकने वाले मनुष्यों की हिन्दुस्तान में बड़ी आवश्यकता है।

—महात्मा गान्धी

❁ ❁ ❁

मूर्खों को किसी प्रकार भी समझाओ, पर उनके

ऊपर उसका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ सकता। कबीरदास जी ने कहा है:—

मूरख को समझावते, ज्ञान गाँठ को जाय।
कोयला होय न ऊजरा, सौ मन साबुन खाय॥

❀ ❀ ❀

कविवर पं० अम्बिकादत्त जी त्रिपाठी ने भी कहा है:-

जैसा स्वभाव जिसका उसको न छोड़े,
चाहे करो प्रबल यत्न न भेद होता।
मीठे न ता मधु से यदि सींच दीजे,
कडुआ पना न तज नीम मिठास देती॥

❀ ❀ ❀

किसी ने लुकमान से पूछा कि तुमने सभ्यता किससे सीखी। जवाब दिया कि असभ्य लोगों से। क्योंकि उनकी जो बात मुझे बुरी लगी उससे मैंने अपने को बचाया।

❀ ❀ ❀

लोभी को धन देकर प्रसन्न करना चाहिये। अत्याचारी और चिड़चिड़े को दीनता और मीठी बातों से। मूर्ख को उसकी बात मानकर। विद्वान को सच कहने से। साधु संत को निष्कपट सेवा से। भाई बन्धु और मित्रों

को सत्कार और प्रीति से। नौकरों और स्त्रियों का दान मान से।

—चाणक्य।

❀ ❀ ❀

सच्चा मित्र वह है जो दर्पण के समान तुम्हारे दोषों को तुम्हें दरसावै। जो कोई तुम्हारे अवगुनों को तुम्हें गुन बतावे उसका नाम ख़ुशामदी है।

❀ ❀ ❀

अगर तुम जानना चाहते हो कि तुम्हारे संगी पीठ पीछे तुम्हारी बाबत क्या कहते हैं तो इससे समझ लो कि वह दूसरों की बाबत तुम्हारे सामने क्या कहते हैं।

❀ ❀ ❀

चरित्र भ्रष्ट होने की अपेक्षा हिमालय की चोटी से गिर कर चूर चूर हो जाना कहीं अच्छा है।

—महात्मा गान्धी।

❀ ❀ ❀

यदि तुम क्रोध से विक्षुब्ध होने पर दाँत को पीस पैर को पटक तथा शरीर को कम्पित कर अपनी आत्मा को शान्ति करने के लिये प्रयास करते हो तो वह शान्ति नहीं है, वह तो क्रोध का संताप है। शान्ति प्रशान्त-सागर के सदृश है जो कि मनुष्यों द्वारा फेके हुये अशुद्ध जल को भी अपने सदृश शुद्ध कर देता है। —स्वामीरामतीर्थ।

❀ ❀ ❀

भाग्यवान वह है जिसका धन उसका गुलाम है। और अभागा वह है जो धन का गुलाम है।

* * *

शिक्षा प्राप्त करते हुये इस प्रकार ध्यान करो कि मानों तुम्हें सर्वदा के लिये संसार में जीवित रहना है। किन्तु संसार में जीवित रहने का ध्यान करते हुये यह सोचो कि मानों तुम्हें कल ही मृत्यु का ग्रास बनना है।

[illegible],
[illegible]।
[illegible] लीजिये,
[illegible] जानिये॥

—[illegible]

* *

हम अपना चित्त परमात्मा में नहीं लगाते, इससे परमात्मा को भी हमारी ओर देखने की फ़ुरसत नहीं मिलती जब हम थोड़े से काम वालों को ही फ़ुरसत नहीं तो सारे जगत का भरण-पोषण करने वाले परमात्मा को समय कहां। यदि हमको अपनी वृत्तियों उसकी ओर लगाने का समय मिले तो उसको भी हर समय फ़ुरसत है।

* * *

बुद्धिमान लोग सोच विचार करने के उपरान्त जिस काम में लग जाते हैं, उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं चाहे उनपर आपत्तियों के पहाड़ ही क्यों न टूट पड़ते हों। विपरीत इसके मूर्ख लोग जिस काम में लगते हैं ज़रा सा कष्ट का सामना पड़ते ही डरकर उसे छोड़कर भाग जाते हैं। नीतिनिधि प्रणेता पं० अम्बिकादत्त जी ने कहा है:—

मूर्ख डूबे सहस्रों प्रशोकाब्धि में।
भीति देती उन्हें कष्ट है सैकड़ों॥
हों नहीं विज्ञ ज्ञानी दु:खी भी ज़रा।
पर्वतों सी गिरे भीति शोकावली॥

❀ ❀ ❀

जो मनुष्य अपने काम में ख़ुद ढीला है उसके सहायक भी ढिलाई करते हैं। जो अपने काम में ख़ुद चुस्त और फ़ुर्तीला होता है उसके मददगार भी वैसे ही होते हैं।

❀ ❀ ❀

जिसकी सल्लाह और तदवीरें किसी को मालुम नहीं होतीं किन्तु किया हुआ काम ही सबकी नज़र आता है वह पण्डित कहलाता है।

❀ ❀ ❀

बुद्धिमान और सुचरित्र मनुष्य पुरुषार्थ को बड़ा मानते हैं। कायर डरपोक मनुष्य प्रारब्ध को बड़ा मानते हैं। उनके प्रारब्ध यानी तकदीर को बड़ा मानने का कारण यह है कि वे लोग पुरुषार्थ करने में असमर्थ हैं। जैसा कि गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है:—

कायर मन कर एक अधारा।
दैव दैव आलसी पुकारा॥

* * *

जो मनुष्य अपनी उन्नति करना चाहता है, जो उद्योग और काम का निश्चय रखता है तथा जिसमें तेज, साहस शक्ति और धैर्य होता है उससे दरिद्रता कोसों दूर भागती है।

* * *

संसार में बड़ों की ही मदद करने के लिये लोग तैयार होते हैं। गरीबों को कोई नहीं पूछता। आजकल के समय में तो उनसे बोलना भी लोग अपनी शान के खिलाफ समझते हैं। इस मौके पर हमें किसी कवि का एक दोहा याद आ रहा है:—

सबै सहायक सबल के कोउ नहिं निबल सहाय।
पवन जगावत आग को दीपहिं देत बुझाय॥

* * *

इन्हीं भावों को लेते हुये आधुनिक कवि पं० अम्बिकादत्त जी त्रिपाठी ने भी कहा है:—

जलाती जभी अग्नि दावाग्नि होके।
सहारा उसे दे रहे वायु झोंके॥
वही दीपको को बुझाता वहाँ है।
मिला दुर्बलों को सहारा कहाँ है॥

❀ ❀ ❀

जो हमें मोक्ष की ओर बढ़ाता है वह शास्त्र है। जो संयम सिखाता है वह धर्म है।

❀ ❀ ❀

बिना सेवा के नम्रता और विवेक प्राप्त ही नहीं होते।

❀ ❀ ❀

जिसने आत्मबल नहीं बढ़ाया वह शरीर बल से अपनी और अपनों की रक्षा करने को बँधा हुआ है।

—महात्मा गान्धी।

❀ ❀ ❀

जो मनुष्य विपत्तियों में भी ईश्वर कृपा का अनुभव करता है, वह कभी मृत्यु के अधीन नहीं होता।

❀ ❀ ❀

धर्म का निवास दूर नहीं है। जो धर्म की अन्वेषण करता है, उसके पास ही धर्म रहता है। जिसने एक बार भी अपनी शक्ति लगाई उसने उसे प्राप्त कर लिया। सज्जनों की संगति से मानव मा[illegible] धर्म का आभास दृष्टिगोचर होता है।

* * *

निःस्वार्थ भाव से सबके साथ प्रेम करो। अपने प्रेम बल से दूसरों के चरित्र को सुधारो। उन्हें ऊँचे उठाओ। तुम्हारे आचरण आदर्श होंगे तो तुम अपने स्वार्थ हीन प्रेम के बल से गिरे हुये भाई को ऊँचा उठा सकोगे। याद रखो शुद्ध आचरण युक्त निःस्वार्थ प्रेम में बड़ा बल होता है।

[illegible]।
झुकाती है हमारी आजिज़ी सरकश की गरदन को॥

—"आतीश"।

❁ ❁ ❁

प्रेम सदा स-हिष्णु और मधुर है। प्रेम में ईर्षा आत्म-श्लाघा, गर्व, अशिष्ट, आचरण, स्वार्थ, क्रोध, अधर्म को स्थान नहीं।

—महा पुरुष ईसा।

❁ ❁ ❁

धन चुराया गया तो रोता क्यों है ? क्या चोर ले गये। रो अपनी इस समझ पर। प्यारे ! लेने, ले जाने वाला दूसरा कोई नहीं है वह एक ही है, जो नये २ बहानों से तेरा दिल लिया चाहता है। गोपियों के इससे बढ़ कर और क्या भाग्य होंगे कि श्रीकृष्ण उनका मक्खन चुरावें। धन्य है वह जिसका सब कुछ चुरा लिया जाय। मन और चित्त तक भी बाकी न रहे।

—स्वामी रामतीर्थ।

❀ ❀ ❀

जगत का जीवन पानी के बुदबुदे के समान है, एक उठता है, तो दूसरा विला जाता है।

यह तन काँचा कुम्भ है, लिये फिरैता साथ।
टपका लागा फूटिना, कुछ नहिं आया हाथ॥

—कबीर दास।

❀ ❀ ❀

जगत की प्रभुता कैसी है, जैसा सपने में मिला हुआ पराया ख़ज़ाना। जागने पर जैसे उस ख़ज़ाने का कुछ भी नहीं रहता, वैसे ही जगत की प्रभुता भी वास्तव में कुछ भी नहीं है।

—सूरदासजी।

❀ ❀ ❀

संसार में बड़ी मुसीबत यह है कि जिस दुःख को दूर करने के लिये हम किसी साधन का उपयोग करते हैं, वही साधन आगे चल कर हमारे लिये दुःख का कारण बन जाता है। जैसे ऋण आदि।

* * *

जिसे खाने को भी ठिकाना नहीं है, जो भीख माँग कर खाता है, जिसके पास ओढ़ने को कपड़ा और रहने को स्थान भी नहीं है, विषय उसे भी आ दबाता है। और व्याकुल कर देता है। विषय ने विश्वामित्र जैसे तपोनिष्ठ ऋषि तक को तो धर दबाया था फिर दूसरों की तो बात ही क्या है। सारांश यह कि विषय बड़ा भारी शत्रु है, इससे जहाँ तक हो सके, सदा बच कर ही रहना चाहिये।

कबिरा माया मोहिनी मोहे जान सुजान।
भागे हूँ छूटे नहीं भरि भरि मारे बान॥
माया के झक जग जरे कनक कामिनी लागि।
कह कबीर कस बाँचिहौ रुई लपेटी आगि॥

—कबीरजी।

* * *

सच्चे दोस्त से जी खोल कर हाल कहने से सुख दूना और दुःख आधा हो जाता है।

❀ ❀ ❀

केवल इच्छा करने ही से कार्य नहीं हो जाते। हौसिला है तो उसे कोशिश करके पूर्ण करो। भूखा सिंह जो सो रहा है उसकी माँद के पास हिरन आप ही नही जाता।

मान सरोवर मांहि जल प्यासा पीवइ जाइ ।
दादू दोष न दीजिये, घर घर कहन न जाइ ॥

—दादूदयालजी ।

❀ ❀ ❀

इसी के साथ किसी काम में हाथ डालने के पहिले अपने पुरुषार्थ को तौल लो। बहुत ऊँचे चढ़ जाने से गिरने का डर और बहुत नीचे पड़े रहने से कुचल जाने का भय होता है।

निपात होता वह जो बढ़ा चढ़ा, कभी न मर्यादित हैं दु:खी हुये ।
उतुङ्ग होके गिरि हीं गिरे हैं, न सिन्धु नीचे गत हो रहा कभी ॥

—प० अम्बिका दत्त त्रिपाठी ।

❀ ❀ ❀

दो मित्रों के झगड़े में पंच बनना एक से हाथ धो बैठना है। इससे अच्छा तो शत्रु के बीच में पंच बनना है

क्योंकि सम्भव है कि जिसके हक़ में तुम्हारा फैसला हो, वह तुम्हारा मित्र बन जाय।

बुद्धिमान के सामने जो बात खेल में भी कही जायगी, वह उससे शिक्षा लेगा। परन्तु यदि मूर्ख को ज्ञान के हज़ार ग्रन्थ सुनाये जावें तो उसको मूर्खता और खेल जान पड़ेंगे।

लोगों की ऐसी समझ है कि जब उन्होंने कालिज का सबसे बड़ा इम्तहान पास कर लिया तो उनकी तालीम पूरी हो गई। पर यह बड़ी भूल है। कथा है कि किसी बड़े कालिज का एक विद्यार्थी एम. ए. पास करने के पीछे अपने प्रोफेसर से बोला कि मेरी शिक्षा पूरी हो चुकी। इससे विदा होने आया हूँ। प्रोफेसर ने मुसकरा कर जवाब दिया कि बड़े हर्ष की बात है, मेरी शिक्षा तो अब आरम्भ हो रही है।

मूर्ख कौन है बकवादी। मूर्ख को चाहिये कि सभा में मुँह न खोले। और बुद्धिमान केवल प्रश्न का उत्तर देने के हेतु। बहुत सुनना और थोड़ा बोलना यही बुद्धिमान का लक्षण है।

कहा है कि सचाई और ईमानदारी के बराबर कोई मतलब की बात नहीं है। पर याद रक्खो कि जो आदमी मतलब पड़ने ही पर ईमानदारी का बरताव करता है, वह पका ईमानदार नहीं कहा जा सकता। ईमानदारी और सचाई उसका नाम है जो सदा अडिग रहे। न कि केवल मतलब के पड़ने पर बरती जाय। ईमानदारी आत्मा की प्रकृति है। और पक्का ईमानदार कभी उसके बरताव में न चूकेगा, चाहे उसका सर्वस्व नाश हो जाय, या किसी छोटी बात में थोड़ी सी ईमानदारी छोड़ने से भारी संसारी लाभ प्राप्त होता हो।

❀ ❀ ❀

नम्रता के ३ लक्षण हैं। कड़वी बात का मीठा जवाब देना २—जब क्रोध बहुत भड़के चुप साधना ३—दण्ड के समय चित्त को कोमल रखना।

❀ ❀ ❀

नट पहिले रस्सी पर अकेला चढ़ता है। और जब उसको अभ्यास हो जाता है तो वह किसी लड़के को अथवा किसी और वस्तु को लेकर उस रस्सी पर नाचता है। इसी प्रकार मनुष्य को चाहिये कि वह पहिले अकेला

रह कर स्वयं पूर्णता प्राप्त करले। पीछे दूसरों को भी अपने साथ रक्खे।

*   *   *

व्यक्ति विशेष में आसक्ति होना निर्बलता और निर्जीवता का सूचक है।

दया और प्रेम ही परमात्मा का बल है।

भाग्य उसी का मित्र है जो उसकी उपेक्षा करता है।

जीवित वही है जो सत्य के लिये प्रति क्षण मर सकता है।

जहां पर बुद्धि कुण्ठित हो जाती है वहां पर प्रेम सफल होता है।

—महात्मा गांधी।

*   *   *

गिरे हुये को उठाओ। गिरते हुये को सँभालो। पर धक्का किसी को मत दो। सोचो यदि कोई तुम्हें धक्का देने लगे तो तुम्हारा हृदय उसे कैसा अभिशाप देता है, वैसे ही उसका भी देगा।

—वियोगी हरि।

*   *   *

सांसारिक भोगों से सुख की इच्छा न करो। सुख तो मिलेगा ही नहीं, परन्तु पग पग पर क्लेश अवश्य भोगना पड़ेगा।

❀ ❀ ❀

अपनी अच्छी बात दूसरों से प्रेम-पूर्वक कहो। परन्तु यह आग्रह न करो कि वह तुम्हारी बात मान ही ले। न मान ने वाले को न तो कभी बुरा कहो, और न मन में ही बुरा समझो। उसे अपनी बात मनवाने की नहीं, परन्तु निवेदन करने की चेष्टा करो। कभी अपनी भूल हो तो मान भंग के भय से अपनी बात पर अड़े मत रहो। भूल को स्वीकार करने में हानि तो होती ही नहीं, ठीक रास्ते पर आने से बड़ा भारी लाभ अवश्य होता है।

❀ ❀ ❀

विपत्ति के समय किसी से सहायता लेना नितान्त आवश्यक ही हो, और वह खुशी के साथ करे तो कृतज्ञ होकर उसे स्वीकार करो। परन्तु उससे अनुचित लाभ न उठाओ। कोई आदमी दयालु है, उसने तुम्हारी सहायता की है, तो फिर बार बार उसे अपने दुख सुनाकर तङ्ग न करो।

❀ ❀ ❀

नित्य हँसमुख रहो। मुख को मलीन कभी मत करो। यह निश्चय कर लो कि चिन्ता ने तुम्हारे लिये जगत में जन्म ही नहीं लिया। आनन्द स्वरूप में सिवा हँसने के चिन्ता का स्थान ही कहां है।

* * *

शान्ति तो तुम्हारे अन्दर है। कामनारूपी डाकिनी का आवेश उतरा कि शान्ति के दर्शन हुये। वैराग्य के महामंत्र से कामना को भगा दो फिर देखो सर्वत्र शान्ति की शान्त मूर्ति

* * *

जो मनुष्य न मिलने योग्य चीजों को चाहता है, और जो शक्ति रहित होकर गुस्सा करता है वे दोनों ही मनुष्य अपने शरीर का नाश करते हैं।

* * *

मनुष्य को चाहिये कि दिन में ऐसा काम करे जिससे रात को सुख से सोवे और जवानी में ऐसा काम करे जिससे बुढ़ापे में सुख पावे जिन्दगी भर ऐसा काम करे जिससे मरने पर सुख मिले।

* * *

अरे पपीहा ! सावधान होकर और चित्त लगा कर हमारी बात सुन ! आकाश में बहुतेरे मेघ हैं किन्तु वह

सब समान नहीं है। कितने तो बरस बरस कर धरती को तृप्त कर देते हैं और कितने ही फ़ज़ूल गरज गरज कर चले जाते हैं। मित्र! इसी लिये जिसे तू देखे उसी के सामने दीनता मत करे।

❀ ❀ ❀

हिरन घास खाकर गुज़ारा करते हैं, मछलियाँ जल से जीविका निर्वाह करती हैं, और सज्जन लोग संतोष वृत्ति से जीवन चलाते हैं परन्तु न जाने क्या बात है, जो शिकारी हिरनों से, मछली मार मछलियों से और दुष्ट लोग सज्जनों से, व्यर्थ शत्रुता करते हैं।

❀ ❀ ❀

मनुष्य अपने प्यारे आँखों के तारे पुत्र को मर जाने पर जंगल में ही छोड़ कर चल देता है अथवा उसे चिता में रख कर जला देता और बाल बिखेर कर रोता है परन्तु उस मरने वाले के साथ कोई नहीं जाता। गरुण पुराण में कहा है:—

धनानि भूमौ पशवश्चगोष्ठे नारी गह-द्वारि जननाश्मशाने।
देहश्चितायाम् परलोक मार्गेधर्मानुगो गच्छति जीव एकः॥

अर्थात् जीव के साथ केवल धर्म ही जाता है। बाकी सब कुछ यहीं रह जाते हैं। इस लिये मनुष्य को

करना चाहिये और कभी घबरा कर निराश न होना चाहिये। कबीरदासजी ने कहा है:—

कविरा क्या मैं चिन्तहूँ मम चिन्ते क्या होय ।
मेरी चिन्ता हरि करै चिन्ता मोहिं न कोय ॥

सन्त कवि सुन्दरदासजी ने भी कहा है:—

धीरज धारि विचार निरन्तर,
तोहि रँच्यो सोइ आपहिं ऐहै ।
जेतिक भूख लगो घट प्रानहिं,
तेतिक तू अनयासहिं पैहै ॥
जो मन में तृसना करि ध्यावत,
तौ तिहुं-लोक न खात अघैहै ।
"सुन्दर" तू मत सोच करै कछु,
चोंच दई जिन चूनहिं दैहै ॥

❀ ❀ ❀

सज्जनों के साथ नर्क में रहना अच्छा है, पर दुर्जनों के साथ स्वर्ग में रहना अच्छा नहीं। क्यों कि सज्जन लोग अपने पुनीत कर्त्तव्यों से नर्क को भी स्वर्ग बना

होते हैं और दुर्जन लोग स्वर्ग को भ्रष्ट करके उसे नर्क बना डालेंगे।

> [illegible] जाना ।
> [illegible] निवाना ॥
>
> —[illegible]

* * *

सिपाही से मनुष्य मरते हों तो सिपाही की जरूरत नहीं। पैसे से दूसरों की चीजों पर अधिकार मिलता हो, तो धर्म की आवश्यकता नहीं।

* * *

जो लोभी विषयों की आशा के दास बने हैं, वे तो सभी के गुलाम हैं। जिन्होंने भगवान में विश्वास करके आशा को त्याग दिया है, वे ही भगवान के सच्चे सेवक हैं।

> [illegible] जगत गुरु, तजे जगत की आस ।
> [illegible] आसा [illegible] जगत गुरु [illegible] दास ॥
>
> — [illegible]

* * *

संसार की प्रत्येक वस्तु में परमात्मा का स्वरूप देखते रहने से हृदय से मोह अपने आपही भाग जाता है। और मोह के चले जाने से हृदय की अशान्ति जाती रहती है। तथा सच्चिदानन्द का भण्डार खुल जाता है।

शरीर को कोई दुःख होने से मन और बुद्धि को कोई दुःख न होना चाहिये। पर होता यह है कि ज़रा भी शारीरिक कष्ट होने से हम रोने बैठ जाते हैं। इसीका नाम अज्ञानता है।

❀ ❀ ❀

संसार में प्रति दिन कितने जीव मरते हैं। पर उन सबके लिये तो हम नहीं रोते। रोते तो केवल उसीके लिये हैं, जिसके साथ हमारी कुछ ममता रहती है। ममता मोह के कारण होती है। इसीलिये सारे दुःखों की जड़ ममता को ही समझना चाहिये।

—कबीर दास।

❀ ❀ ❀

भगवान मंगलमय हैं। हमारे परम हितैषी हैं। सर्वज्ञ हैं। किस बात में कैसे हमारा हित होता है, इस बात को वे जानते हैं। अतएव उनके प्रत्येक विधान का स्वागत करो, उनके हाथ दिये हुये ज़हर में अमृत का अनुभव करो, उनके हाथ की तलवार में शान्ति की छवि देखो, उनके कोमल कर-स्पर्श से महिमा को पाये हुये सु-दर्शन में चरम सुख के शुभ दर्शन करो, उनकी दी हुई

मौत में अमरत्व को प्राप्त करो और उनके प्रत्येक मंगल विधान में उनको स्वयमेव अवतीर्ण देखो।

* * *

आगे के लिये कोई प्रतिज्ञात्मक शब्द मत बोलो और न लिखो। शरीर क्षणभंगुर है, न मालूम कब नष्ट हो जाय, कहे हुये वचनों के अनुसार काम नहीं हो सका, तो वे शब्द असत्य हो गये।

* * *

इस संसार में सभी सराय के मुसाफिर हैं। थोड़ी देर के लिए एक जगह टिके हैं। सभी को समय पर यहाँ से चल देना है। यह मकान किसीका नहीं है। फिर इसके लिये किसी से लड़ना क्यों चाहिये?

तुलसी या संसार में भाँति २ के लोग।
सबसे हिल मिल चालिये नदी नाव संयोग॥

—तुलसीदास।

कबीरदास ने भी कहा:-

[illegible] पाहुन, [illegible] हमारो [illegible]।
[illegible] [illegible] डेरा [illegible] [illegible]॥

* *

जो पास में धन रहने पर भी अपने भाइयों की दीन

अवस्था पर तरस नहीं खाता, और उनकी सहायता नहीं करता, उसके हृदय में प्रभु का प्रेम कैसे धँस सकता है ?

❀ ❀ ❀

बहुतेरे मनुष्य सारे दिन काम करते हैं। बहुत उद्योगी होते हैं, पर उनका उद्योग आलस्य को दिखावटी सुन्दरता का रूप देने जैसा होता है। ऐसे उद्योगी की अपेक्षा निरुद्योगी का एकान्त चिन्तन अधिक अच्छा है। जिसे कुछ जानने की इच्छा हो, वह सबसे पहिले अपना जीवन देखे। वहीं से सब प्रकार का ज्ञान का आरम्भ होता है।

❀ ❀ ❀

कीचड़ में पैदा होना, एक आकस्मिक बात है। उसमें महत्ता भी नहीं और लघुता भी नहीं, पर उसमें से कमल बनने में सच्ची खूबी है।

❀ ❀ ❀

आपकी निराशा का कारण यही है कि आप अपने सुख के लिये ही जीना चाहते हैं।

—टाल्स्टाय।

❀ ❀ ❀

मनुष्य ईर्ष्या से अन्धा बनता है। दूसरों के पाप तो अपनी आँखों के सामने रखता है, पर अपने पाप पीठ पीछे। दूसरों के पाप क्षमा करो, यदि ऐसा नहीं करोगे

तो तुम्हारे पाप माफ़ न होंगे। दूसरों के पाप प्रगट नहीं करो। ईश्वर तुम्हारे पाप क्षमा करेगा।

—[illegible]।

* * *

मनुष्य अपनी या दूसरे की आवश्यकताओं को समझने में असमर्थ है। इसे तो ईश्वर ही जानता है। तुम अपनी चिन्ता छोड़ो, तभी तुम्हारा हृदय साफ़ होगा। और दूसरों के हृदय को साफ़ कर सकोगे। तुम स्वयं मौन का भार छोड़ो, और ईश्वर में जीवन को दृढ़ बनाओ, तभी तुम दूसरों के हृदय जीत सकोगे।

—[illegible]।

* * *

चिन्ता करने से विचार का नाश होता है और विचार का नाश होने से मनमें विकार उत्पन्न होता है। फिर विकार से अशान्ति तथा अशान्ति से दुःख मिलता है। तथा कर्त्तव्य विगड़ता है। इसीलिये चिन्ता कभी नहीं करना चाहिये।

> चाह गई चिन्ता मिटी मनुवां बे परवाह।
> जिनको कछू न चाहिये सोई साहसाह॥

—कबीरदास।

काहे को फिरत नर दीन भयो घर-घर,
देखियत तेरो तो अहार इक सेर है।
जाको देह सागर मे सून्यो सत-योजन को
ताहू को तौ देत प्रभु या मे नहिं फेर है॥
भूखों कोऊ रहत न जानिये जगत मांहि
कीरो अरु कुञ्जर सबन ही को देर है।
"सुन्दर" कहत विसवास क्यों न राखे सठ
बार बार समुझाइ कह्यो केती बेर है॥

— सुन्दरदास।

❀ ❀ ❀

कोई मरा हुआ प्राणी रोने से जीवित नहीं हो सकता और बीमार चिन्ता से अच्छा नहीं हो सकता। इसलिये किसी की मृत्यु पर रोना और बीमार के लिये चिन्ता करना व्यर्थ है।

❀ ❀ ❀

किसी चीज से मत चिढ़ो। काम उसी निर्लिप्त भाव से करो, जिस तरह वैद्य लोग अपने रोगियों की चिकित्सा करते हैं और रोग को अपने पास नहीं फटकने देते। सब उलझनों से मुक्त अथवा द्रष्टा साक्षी की भावना से काम करो। स्वतन्त्र रहो।

दोउ [illegible] समान हैं, [illegible] तथा [illegible] का [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] से तुमको मतलब ॥

—[illegible] ।

* * *

तुम्हारी राय पर कोई न चले तो बुरा मत मानो। न उससे घृणा करो। बल्कि तुम्हारी राय के अनुसार काम करने के कारण उसको कोई नुकसान पहुंचा हो, और वह फिर कभी मिले, तो उससे यह मत कहो कि मेरी राय न मानने का फल तुम्हें मिला है। उसके साथ प्रेम से मिलो। उसे समय पर फिर अपनी नेक सलाह दो। और अच्छे मार्ग पर चलाने की चेष्टा करो।

* * *

जिनका हृदय दर्पण की तरह निर्मल हो जाता है, वे जब गुरू के सम्मुख जाकर बैठते हैं, तो उनके भीतर अपने आप ही समस्त ज्ञान प्रगट हो जाता है। और वे अनायास ही तर जाते हैं।

दादू परदा भरम का रहा सकल घट छाइ ।
गुरु गोविन्द कृपा करइ सहजे ही मिटि जाइ ॥

—दादू दयाल ।

* * *

कर्मफल ।

तुम जैसा कर्त्तव्य करोगे, वैसा ही फल भी पाओगे। अगर तुमने दूसरों की भलाई की है, किसी प्राणी को भूल करके भी दुःख नहीं पहुँचाया है, तो निश्चय ही तुम्हें सुख और शान्ति की उपलब्धि होगी। अगर तुमने दूसरों की हड्डियों को चूस चूस कर धन जमा किया, किसी का कुछ भी उपकार नहीं किया तो तुम्हें अनेकों यातनाओं का सामना अवश्य करना पड़ेगा।

तुलसी काया खेत है मनसा भयो किसान।
पाप पुण्य दोउ बीज हैं बुवे सो लुने निदान॥

—कबीरदास।

❀ ❀ ❀

काम।

मनुष्य जीवन की सार्थकता को नष्ट करने में जितने कारण होते हैं उनमें सबसे पहिला नम्बर काम का है। इस प्रबल शत्रु के आक्रमण करते ही मनुष्य की सारी

लोभ

लोभ बहुत ही बुरी बला है। इससे मनुष्य की प्रतिष्ठा धूल में मिल जाती है, और वह बन्दरों की तरह नाचा करता है। लोभी मनुष्य का लोक परलोक दोनों बिगड़ जाता है। वह बहुत ही दुःखी होकर रोते चिल्लाते तथा छटपटाते हुए अपनी संसार यात्रा करता है।

कबीरदास जी ने कहा हैः—

कबिरा त्रिसना पापिनी, तासों प्रीति न जोरि।
पैंड पैंड पाछे परै, लागे मोटी खोरि॥

सन्त कवि सुन्दरदासजी ने भी कहा हैः—

तूहीं भ्रमाय प्रदेश पठावत,
बूड़त जाय समुद्रहि भाजा।
तूहीं भ्रमाय पहार चढ़ावत,
वाद वृथा मरि जाय अकाजा॥
तैं सब लोक भ्रमाय भली विधि,
भांड किये सब रकहु राजा।
"सुन्दर" तोहि दुपाइ कहौं अब,
हे त्रिसना तोहिं नेकु न लाजा॥

अभिमान

रावण का सत्यानाश, दुर्योधन की हार, कौरवों का वध, इत्यादि सहस्रों प्रमाण ऐसे हैं, जिनसे अभिमान के नतीजे का पता लग जाता है। अभिमान ही से अच्छे २ लोग भी फिसल कर अपने पुण्य फल के अधिकार को नष्ट कर देते हैं। अभिमान की बात रबड़ के उस गोले के समान समझनी चाहिये जिसे छोटे छोटे बच्चे अपने मुंह से फुलाते हैं। ज्यों २ गोले को फुलाते जाते हैं त्यों ही त्यों गोला फटने की दशा में समीप पहुंचता जाता है। इसी प्रकार मनुष्य भी ज्यों ज्यों अपने अहंकार को बढ़ाता जाता है त्यों ही त्यों वह सर्वनाश के समीप पहुंचता जाता है।

* * *

मोह

जिस प्रकार मकड़ी के जाले में फंस कर मक्खियाँ छटपटा कर अपना प्राण गवां देती हैं, इसी प्रकार मनुष्य भी मोह के जाल में फंस कर जन्म मरण के चक्कर में फंसा करता है। उसे इस संसार के तत्व का कुछ भी ज्ञान नहीं होता और वह देव-दुर्लभ मनुष्य योनि को योंही वृथा कर यहाँ से चला जाता है।

अहिंसा

मनसा, वाचा, और कर्मणा से संसार में किसी भी प्राणी को किसी भी प्रकार का कष्ट न देना अहिंसा कहलाता है महर्षि पतञ्जलि ने अपने योग दर्शन में लिखा है:—"मनो वाक्यायैसर्वभूतानाम् पीडनम्हिंसा" यदि तुम संसार में किसी को न सताओगे तो तुम्हें भी सताने वाला कोई न रहेगा। ऐसा सृष्टि का अनिवार्य नियम है।

❁ ❁ ❁

अस्तेय

"परद्रव्यापहरणम् स्तेयम्" दूसरे के धन को विना उसकी आज्ञा के लेना स्तेय यानी चोरी है। अतएव किसी मनुष्य की किसी भी वस्तु को बिना उसकी आज्ञा के अपने काम में न लाओ यदि तुम इसी नियम के पालन करने के आदी बन जाओगे तो संसार में तुम्हारी हानि कभी भी न होगी। और तुम आगे चल कर अनुपम आनन्द का अनुभव स्वयं करने लग जाओगे।

—योग दर्शन।

❁ ❁ ❁

ईश्वर की पहचान

सारे संसार के साथ प्यार करना सीखना ही ईश्वर के पहिचानने का सबसे सुगम उपाय है।

* * *

पाप

एक भी प्राणी को पीड़ा पहुँचाना, शत्रु मानना पाप है : जिस काम में आत्मा का पतन हो वह पाप है।

* * *

प्रार्थना

ईश्वर से सांसारिक सुख या दूसरी स्वार्थ-सिद्धि की चीजें माँगना प्रार्थना नहीं है। प्रार्थना दुःख से व्याकुल आत्मा का गम्भीर नाद है। व्यक्ति या जाति जब किसी महान पीड़ा से व्याकुल हो उठती है तब उस पीड़ा का शुद्ध ज्ञान ही प्रार्थना है।

—महात्मा गांधी।

शील

सीलवन्त सबसे बड़ा सर्व रतन की खानि ।
तीन लोक की सम्पदा रही सील में आनि ॥
ज्ञानी ध्यानी संयमी दाता सूर अनेक ।
जपिया तपिया बहुत हैं सीलवन्त कोइ एक ॥

—कबीरदास ।

❀ ❀ ❀

धैर्य्य

देखो ! सूखे पेड़ धैर्य रखने से हरे भरे हो जाते हैं। कुत्ता मारा २ फिरता है पर हाथी धैर्य रखने से ही मन भर भोजन पाता है। अतएव सफलता का बड़ा साधन धैर्य है, इसे कभी मत भूलो।

— भर्तृहरि ।

❀ ❀ ❀

नम्रता

कबिरा नवै सो आप को पर को नवै न कोय ।
घालि तराजू तौलिये नवै सो भारी होय ॥

ऊँचे पानी ना टिके नीचे ही ठहराय।
नीचा होय सो भरि पिये ऊँचा प्यासा जाय॥
लघुता ते प्रभुता मिलै प्रभुता ते प्रभु दूरि।
चींटी लै सक्कर चली हाथी के सिर धूरि॥

—कबीरसाहब।

* * *

भय

भय राग से उत्पन्न होता है और इसी के भीतर छिपा रहता है। जब तुम्हें शरीर के प्रति राग होता है तो मृत्यु का भय आ घेरता है। जब तुम्हें द्रव्य के प्रति राग होता है तो द्रव्यहानि का भय उत्पन्न होता है। क्योंकि द्रव्य ही भोग के उपकरणों के प्राप्त करने का साधन है। जब तुम्हें स्त्री के प्रति राग होता है तो तुम्हें सदा उसकी रक्षा की ही चिन्ता बनी रहती है। भय राग का बहुत पुराना और घनिष्ठ मित्र है।

—शिवानन्द।

* * *

मन

मन एक महान पक्षी है। क्योंकि यह एक विषय से दूसरे विषय पर ठीक वैसे ही कूदता है जैसे पक्षी एक टहनी से दूसरी टहनी पर या एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर फुदकते रहते हैं।

मन की गति का खूब सावधानी के साथ निरीक्षण करो। यह प्रलोभन देता है, बढ़ावा देता है, मुग्ध करता है, व्यर्थ ही शंकित करता है, व्यर्थ ही भय दिखलाता है, व्यर्थ ही संत्रस्त होता है, और व्यर्थ ही अनिष्ट ज्ञापन करता है। लक्ष्य को ध्यान से हटाने के लिये यह अपनी शक्ति भर कोशिश करता है, यह तरह २ के धोखे देता है, जब एक बार इसकी गति का निरीक्षण करते हैं तो यह चोर के समान छिपने लगता है और फिर आप को आपद् ग्रस्त नहीं करता। —शिवानन्द।

मन के बहुतक रंग हैं छिन छिन बदलैं सोय।
एकै रंग में जो रहै ऐसा बिरला कोय॥
कबिरा मनहिं गायन्द है आँकुस दै दै राखु।
विष की बेली परिहरी अमृत का फल चाखु॥
मन स्वारथ आपुहिं रसिक विषय लहरि फहराय।
मन के चलतै तन चलत ताते सरबसु जाय॥

—कबीर साहेब।

❀ ❀ ❀

साहित्य-सागर कार्यालय द्वारा प्रकाशित
उत्तम पुस्तकें

(१) **भंग में रंग**—यह एक पौराणिक खंड काव्य है। इसमें प्रतिव्रता सावित्री और सत्यवान की कथा बड़ी ही रोचक ढङ्ग से लिखी गई है। इसकी भाषा सजीव एवं वर्णन शैली आकर्षक है। बड़े २ साहित्यिकों ने इसकी प्रशंसा की है। इस पुस्तक के लेखक हैं खड़ी बोली के प्रसिद्ध कवि पं० अम्बिकादत्तजी त्रिपाठी। मू० केवल ।)

(२) **सीय स्वयंवर नाटक**—रचना सरल एवं सरस। गद्य पद्य बड़े ही भाव पूर्ण। छोटे बड़े सभी के विनोद की शुद्ध सामग्री। लेखक पं० अम्बिकादत्तजी त्रिपाठी मूल्य ≡)

(३) **चर्खा**—भारत के भूखे कंगालों का पेट कैसे भर सकता है, भारत की खोई हुई शक्ति कैसे वापस आ सकती है, भारत की परतन्त्रता कैसे हटाई जा सकती है, ये सब बातें बड़ी ही ख़ूबी के साथ इस छोटी सी पुस्तक में मधुर छन्दों द्वारा बतलाई गई हैं। महात्मा गान्धी भी इस पुस्तक को देखकर प्रसन्न होगये। मूल्य सिर्फ -)॥

(४) **सामान्यनीति**—पं० हरिदीनजी त्रिपाठी लिखित [illegible] । मूल्य ≡)

(५) **प्रबन्ध दीपक**—पं० हरिदीनजी त्रिपाठी लिखित प्रबन्ध रचना शैली का अच्छा वर्णन । विद्यार्थियों के काम की चीज । मूल्य ≡)

(६) **कृष्णकुमारी**—एक ऐतिहासिक नाटक ग्रन्थ । लेखक पं० अम्बिकादत्त जी त्रिपाठी मूल्य ।)

(७) **सदुपदेश-संग्रह**—आपके हाथ ही में है ।

प्रकाशक—

साहित्य-सागर-कार्यालय

[illegible] जौनपुर ।

प्रेमी पाठकों से

जब कभी मुझे धार्मिक ग्रन्थों अथवा पत्र पत्रिकाओ के अध्ययन का सौभाग्य प्राप्त होता था, उस समय जो उपदेश-प्रद बाते मुझे अच्छी लगती थीं, उन्हे मैं स्वान्तस्सुखाय डायरी में नोट कर लिया करता था। थोड़े ही समय मे मेरे पास प्रात स्मरणीय नये तथा पुराने देशीय विदेशीय महापुरुषों एवं विद्वानों के अमृत-मय उपदेशों की एक अच्छी पूँजी हो गई। प्रस्तुत पुस्तक उन्ही उपदेशों का संकलन मात्र है। मुझे विश्वास है कि इससे आपका कुछ न कुछ लाभ अवश्य होगा। मैंने नीति-संग्रह-शिरोमणि, लोक परलोक हितकारी, गुलिस्ताँ, प्रगतिनेपंथे (गुजराती) इन पुस्तकों एव "कल्याण" "पुस्तकालय" (गुजराती) "शारदा" (गुजराती) इन उच्च कोटि की पत्रिकाओं से विशेष सहायता ली है। एतदर्थ इनका हृदय से कृतज्ञ हूँ।

लकसा, काशी
वसत पंचमी, १९९२

रामनारायण मिश्र

प्रार्थना

हे नाथ ! तुम्हीं सब के स्वामी, तुम्हीं सब के रखवारे हो।
तुम्हीं सब जग में व्यापि रहे, विभु रूप अनेकों धारे हो॥
तुम्हीं जल थल नभ अग्नि तुम्हीं, तुम सूरज चांद सितारे हो।
यह सभी चराचर है तुममें, तुम्हीं सब ध्रुव के तारे हो॥
हम अति मूढ़ अज्ञानी जन, नित भवसागर में डूब रहे।
नहिं नेक तुम्हारी भक्ति करें, मन मलिन विषय में चूर रहे॥
सत्संगति में नहिं जावें कभी, खल-संगति में भरपूर रहे।
सहते दारुण दुख दिवस रैन, हम सच्चे सुख से दूर रहे।
तुम दीनबन्धु जगपावन हो, हम दीन पतित अति भारी हैं।
है नहीं जगत में ठौर कहीं, हम आये शरण तुम्हारी हैं॥
हम पड़े तुम्हारे द्वार पर, तुम पर तन मन धन वारी हैं।
अब कष्ट हरो हरि हे हमरे, हम निश्चित निपट दुखारी हैं॥
इस टूटी फूटी नैया को, भवसागर से खेना होगा।
फिर निज हाथों से नाथ उठा कर, पास बिठा लेना होगा॥
हो अशरण-शरण अनाथ-नाथ, अब तो आश्रय देना होगा।
हमको प्रभु चरणों का निशिदिन, निज दास बना लेना होगा॥